



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 159]

No. 159]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 19, 2013/आषाढ़ 28, 1935

NEW DELHI, FRIDAY, JULY 19, 2013/ASHADHA 28, 1935

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 19 जुलाई, 2013

**विषय :** यूरोपियन यूनियन मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेट के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच के अंतिम जांच परिणाम के संबंध में ।

सं. 14/8/2011-डीजीएडी.—यतः, समय-समय पर यथा संशोधित सीमा-शुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 और उसके अंतर्गत बने, समय-समय पर यथा संशोधित, सीमा-शुल्क प्रशुल्क (पाटिल वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए ।

**क. मामले की पृष्ठभूमि**

1. यतः, समय-समय पर यथा संशोधित सीमा-शुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है ) और उसके अंतर्गत बने, समय-समय पर यथा संशोधित, सीमा-शुल्क प्रशुल्क (पाटिल वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली अथवा पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी को, यूरोपियन यूनियन के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेट के कथित पाटन का आरोप लगाते हुए, मै. ल्यूपिन लिमिटेड, मुम्बई से एक लिखित आवेदनपत्र प्राप्त हुआ है । मै. अरबिन्दों फार्मा लिमिटेड ने आवेदन पत्र का समर्थन किया है ।

**ख. प्रक्रिया**

2. इस जांच में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है :

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) ने उपर्युक्त नियामवली के अंतर्गत यूरोपियन यूनियन (जिसे एतदपश्चात ई यू अथवा संबद्ध क्षेत्र कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीफाइक्सिल मोनोहाइड्रेट (जिसे एतदपश्चात सम्बद्ध वस्तु अथवा उत्पाद कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए घरेलू उद्योग की ओर से मै. ल्युपिन लिमिटेड, मुम्बई (जिसे एतदपश्चात आवेदक कहा गया है) से एक लिखित आवेदनपत्र प्राप्त होने के पश्चात और आवेदक द्वारा इस जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर, सम्बद्ध क्षेत्र से सम्बद्ध वस्तु के आयातों के विरुद्ध एक जांच प्रारंभ करने का निश्चय किया है।
- (ii) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के उपनियम 5(5) के अनुसार जांच प्रारंभ करने की प्रक्रिया से पहले भारत में यूरोपियन यूनियन के प्रतिनिधिमंडल, नई दिल्ली तथा भारत में स्पेन के राजदूतावास (क्योंकि आवेदक ने अपने आवेदन पत्र में स्पेन के एक ऐसे उत्पादक/निर्यातक का नाम लिया था जिसे संबद्ध वस्तु का भारत में पाटन करने के लिए दोशी बताया था) को कथित पाटन के आवेदन पत्र की प्राप्ति के बारे में अधिसूचित किया।
- (iii) प्राधिकारी ने संबद्ध क्षेत्र से संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच प्रारंभ करने के लिए दिनांक 22 फरवरी, 2012 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना संख्या 14/8/2011-डीजीएडी जारी की।
- (iv) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार इस सार्वजनिक सूचना की एक प्रति सभी जात निर्यातकों (जिनके आवेदन पत्र में ब्यौरे उपलब्ध कराये गये थे) को प्रेषित की और 37 इस जांच शुरुआत अधिसूचना की तारीख से 40 दिनों के अंदर अपने विचारों से लिखित रूप में अवगत कराने के लिए अवसर प्रदान किया।
- (v) प्राधिकारी ने उक्त सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी जात आयातकों/प्रयोक्ताओं को भी प्रेषित की और उन्हें सुझाव दिया कि वे इस जांच शुरुआत अधिसूचना की तारीख से 40 दिनों के अंदर अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करें।
- (vi) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार आवेदन पत्र के अगोपनीय पाठ की एक प्रति जात निर्यातकों, भारत में यूरोपियन यूनियन के प्रतिनिधिमंडल और भारत में स्पेन के राजदूतावास को प्रदान करायी। आवेदन पत्र की एक प्रति अन्य हितबद्ध पक्षकारों, जहां अनुरोध किया गया, को भी उपलब्ध कराई गई।
- (vii) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार संबद्ध क्षेत्र के निम्नलिखित जात निर्यातक (जिनका ब्यौरा आवेदन पत्र में उपलब्ध कराया गया था) को संगत जानकारी देने के लिए प्रश्नावलियां भेजी गईं:
- मैसर्स डीएसएम ऐंटी-इंफेक्टिवज कैमफर्म एस.ए.स्पेन (उत्पादक)
- (viii) जांच शुरुआत अधिसूचना के प्रत्युत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने प्रत्युत्तर भेजा:
- मैसर्स डीएसएम ऐंटी-इंफेक्टिवज कैमफर्म एस.ए.स्पेन (उत्पादक), (इसे अब डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल स्पेन एस.ए कहा जाता है)

- ii. मैसर्स डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स नीदरलैंड्स बी.वी., नीदरलैंड्स (उत्पादक एवं निर्यातक), और
  - iii. मैसर्स डीएसएम ऐंटी-इंफेक्टिव्ज इजिप्ट, एसएई (व्यापारी एवं निर्यातक)
- (ix) पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को (जिनके ब्यौरे आवेदन पत्र में उपलब्ध कराये गये थे) को आवश्यक सूचना मांगते हुए प्रश्नावलियां भेजी गईं:
- i. मैसर्स डीएसएम ऐंटी-इंफेक्टिव्ज इंडिया लिमिटेड गुड़गांव (इसे अब सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुड़गांव कहा जाता है)
  - ii. मैसर्स माइक्रो लैब्स लिमिटेड, बंगलौर
  - iii. मैसर्स अरिस्टो फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड, मुम्बई
  - iv. मैसर्स अजंता फार्मा लिमिटेड, मुम्बई
  - iv. मैसर्स एफडीसी लिमिटेड, मुम्बई
  - v. मैसर्स इंडियन ड्रग मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईडीएमए), मुम्बई
  - vi. आर्गेनाइजेशन आफ फार्मास्युटिकल प्रोड्यूसर्स ऑफ इंडिया (ओपीपीआई), मुम्बई
  - vii. बल्क ड्रग मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (बीडीएमए), हैदराबाद
  - ix. आरचिड कैमिकल्स एंड फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड, चेन्नई
- (x) जांच शुरुआत अधिसूचना के प्रत्युत्तर में निम्नलिखित आयातकों ने प्रत्युत्तर दिया।
- i. मैसर्स सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुड़गांव (जिसे पहले मैसर्स डीएसएम ऐंटी-इंफेक्टिव्ज इंडिया लिमिटेड गुड़गांव कहा जाता था (आयातक एवं व्यापारी)
  - ii. मैसर्स माइक्रो लैब्स लिमिटेड, बंगलौर
- (xi) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किये गये साक्ष्य का अगोपनीय पाठ सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाइल के रूप में खुले रखे गये के रूप में उपलब्ध कराया।
- (xii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई जानकारी की प्राधिकारी ने गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की। संतुष्ट होने पर, प्राधिकारी ने, जहां कहीं आवश्यक हुआ, गोपनीयता के दावे को स्वीकार कर लिया और उस सूचना को गोपनीय मान लिया गया तथा उसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया। गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान कराये जाने वाले पक्षकारों को निदेश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दर्ज सूचना का पर्याप्त अगोपनीय पाठ, जहां कहीं संभव हो, भी उपलब्ध करायें।
- (xiii) आवश्यक समझी गई सीमा तक अन्य जानकारी आवेदक तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों से मांगी गई।

- (xiv) पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत जानकारी के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत तथा उसे बनाने तथा उसकी बिक्री करने की लागत के आधार पर गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया गया ताकि यह निश्चय किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटन रोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (xv) यह जांच 1 अप्रैल, 2010 से प्रारंभ करके 30 सितम्बर, 2011 तक की जांच अवधि (पीओआई) के लिए की गई थी। तथापि, इस संदर्भ में, क्षति विश्लेषण करने के लिए, प्रवृत्तियों की जांच करने हेतु वित्तीय वर्ष 2007-08, 2008-09, 2009-10 और जांच की अवधि को शामिल किया गया।
- (xvi) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों की बात सुनने के लिए 14 दिसम्बर, 2012 को एक मौखिक सुनवाई का आयोजन किया गया। इस सुनवाई के समय उपस्थित हितबद्ध पक्षकारों को सलाह दी गई कि वे मौखिक रूप से अभिव्यक्त अपने विचारों को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें और इसके अतिरिक्त, अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अभिव्यक्त विचारों का प्रति-प्रत्युत्तर प्रदान करने का भी उन्हें अवसर दिया गया। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित प्रस्तुतिकरणों और प्रति-प्रत्युत्तर पर संगत समझी गई सीमा तक विचार किया गया। उन अनिवार्य तथ्यों युक्त एक प्रकटन विवरण, जो इस अंतिम जांच परिणाम का आधार बनेगे, जारी किया गया और सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उस प्रकटन विवरण के उपरांत किये गये प्रस्तुतिकरणों की प्राधिकारी द्वारा संगत समझी गयी सीमा तक जांच की गई।
- (xvii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों का प्राधिकारी द्वारा संगत समझी गयी सीमा तक विश्लेषण किया गया और उनका इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में समाधान प्रस्तुत किया गया।
- (xviii) यह जांच पूरी करने की मूल तारीख 22 फरवरी, 2013 थी। तथापि, प्राधिकारी के अनुरोध पर, वित्त मंत्रालय ने यह तारीख बढ़ाकर 22 जुलाई, 2013 कर दी।
- (xix) इस जांच के सभी अनिवार्य तथ्यों युक्त एक प्रकटन विवरण, जो इस अंतिम जांच परिणाम का आधार बनेगा दिनांक 24.06.2013 को सभी हितबद्ध पक्षकारों को भेजा गया। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरणों पर इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में संगत पाई गई सीमा तक विचार किया गया है।
- (xx) \*\*\* इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का प्रतिनिधित्व है और उस पर तदनुसार नियमावली के अंतर्गत विचार किया गया।
- (xxi) इस जांच अवधि के लिए अपनाई गई विनिमय दर 1 अमरीकी डालर = 45.87 रुपया है।

#### ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

#### घरेलू उद्योग के विचार

3. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद (पीयूसी) यूएसपी तथा अन्य फामेकोपियल ग्रेडों युक्त तथा इस ग्रेड के लवण, यदि कोई हो, सहित सभी रूपों का सीफाझाक्सिल मानोहाइड्रेट बल्क ग्रेड शामिल है। सीफाझाक्सिल

मानोहाइड्रेट एक सफेद से पीले जैसे सफेद रंग का क्रिस्टलाइन पाउडर होता है। यह जल में घुलनशील तथा अम्ल में स्थिर रहने वाला पदार्थ है। बल्क ड्रग सीफाड्राक्सिल मानोहाइड्रेट एक सक्रिय फार्मास्युटिकल संघटक है जिसका प्रयोग फार्मास्युटिकल संविन्यासों का विनिर्माण करने के लिए किया जाता है। इस बल्क ड्रग का प्रयोग डाक्टर द्वारा लिखे गये नुस्खों पर मरीजों द्वारा उपयोग किये जाने के लिए संविन्यासों का विनिर्माण करने में किया जाता है। 500 मिलीग्राम और 1000 मिलीग्राम की एक खुराक के रूप में प्रतिदिन एक खुराक या दो खुराक के रूप में उपलब्ध होता है। यह सीरप के रूप में भी उपलब्ध है। इस भेषज का उपयोग मुंह से ली जाने वाली खुराक के रूप में किया जाता है। बल्क भेषज सीफाड्राक्सिल मानोहाइड्रेट ओरल सीफालोस्पोरिन्स वर्ग के अंतर्गत आता है। सीफालोस्पोरिन्स, समान रूप से, व्यापक बैक्टीरियासाइडल एजेंट होते हैं जो बैक्टीरियाई कोशिका दीवार सिंथेसिस में निवास करते हैं। इसका प्रयोग मूत्र नली में होने वाले संक्रामण और त्वचा संक्रामण के लिए भी किया जाता है। बल्क ड्रग सीफाड्राक्सिल मानोहाइड्रेट को सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अंतर्गत अध्याय-29 के उपशीर्षक संख्या 29420011 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल एक संकेतक है और यह वर्तमान जांच के दायरे में किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

#### निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं, प्रयोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

4. किसी भी निर्यातक, आयातक, उपभोक्ता तथा अन्य हितबद्ध पक्षकार ने इस विचाराधीन उत्पाद के दायरे के संबंध में कोई भी कोई भी मौलिक मुद्दा नहीं उठाया है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

5. प्राधिकारी ने नोट किया है कि विचाराधीन उत्पाद को बल्क ड्रग सीफाड्राक्सिल मानोहाइड्रेट के रूप में परिभाषित किया जाता है। सीफाड्राक्सिल मानोहाइड्रेट एक सफेद से पीले जैसे सफेद रंग का क्रिस्टलाइन पाउडर होता है। यह जल में घुलनशील तथा अम्ल में स्थिर रहने वाला पदार्थ है। बल्क ड्रग सीफाड्राक्सिल मानोहाइड्रेट एक सक्रिय फार्मास्युटिकल संघटक है जिसका प्रयोग फार्मास्युटिकल संविन्यासों का विनिर्माण करने के लिए किया जाता है इस बल्क ड्रग का प्रयोग डाक्टर द्वारा लिखे गये नुस्खों पर मरीजों द्वारा उपयोग किये जाने के लिए संविन्यासों का विनिर्माण करने में प्रयोग किया जाता है। 500 मिलीग्राम और 1000 मिलीग्राम की एक खुराक प्रतिदिन, एक खुराक या दो खुराक के रूप में उपलब्ध होता है। यह सीरप के रूप में भी उपलब्ध है। इस भेषज का उपयोग मुंह से ली जाने वाली खुराक के रूप में किया जाता है। बल्क भेषज सीफाड्राक्सिल मानोहाइड्रेट ओरल सीफालोस्पोरिन्स वर्ग के अंतर्गत आता है। सीफालोस्पोरिन्स, समान रूप से, व्यापक बैक्टीरियासाइडल एजेंट होते हैं जो बैक्टीरियाई कोशिका दीवार सिंथेसिस में निवास करते हैं। इसका प्रयोग मूत्र नली में होने वाले संक्रामण और त्वचा संक्रामण के लिए भी किया जाता है। बल्क ड्रग सीफाड्राक्सिल मानोहाइड्रेट को सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अंतर्गत अध्याय-29 के उपशीर्षक संख्या 29420011 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल एक संकेतक है और यह वर्तमान जांच के दायरे में किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

#### समान वस्तु

6. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) के अंतर्गत समान वस्तु को निम्नवत परिभाषित किया गया है:

“समान वस्तु का आशय भारत में पाटित की जा रही उस वस्तु से है जो जांचाधीन वस्तु के बिल्कुल समान अथवा एक जैसी वस्तु हो अथवा इस वस्तु के अभाव में कोई अन्य वस्तु, जो यद्यपि सभी गुणों में समान न हो फिर भी, उसके गुणधर्म जांच के अधीन वस्तु के बिल्कुल अनुरूप हो”।

7. आवेदक ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध क्षेत्र से भारत में आयात किये जा रहे विचाराधीन उत्पाद दोनों समान उत्पाद हैं। आवेदक ने दावा किया है कि आवेदक द्वारा उत्पादित उत्पाद तथा संबद्ध क्षेत्र से निर्यातित उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। दोनों ही उत्पादों का भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्म, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य एवं प्रयोगों उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन और वस्तु के प्रशुल्क वर्गीकरण के रूप में तुलनीय विदेशताएं हैं। आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध क्षेत्र, से भारत को निर्यात की जा रही सम्बद्ध वस्तु तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय है। किसी भी प्रत्युत्तरदाता हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में आवेदक के दावे का विरोध नहीं किया है।

8. प्राधिकारी ने मामले की जांच की है तथा यह नोट करते हैं कि सम्बद्ध क्षेत्र से भारत को आयातित सम्बद्ध वस्तु तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध क्षेत्र से आयातित सम्बद्ध वस्तु कतिपय गुणधर्मों जैसे भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्म, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी कार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तु का प्रशुल्क वर्गीकरण के रूप में तुलनीय है। दोनों ही वस्तुओं का प्रयोग अंतर्वधदल करके कर रहे हैं। किसी भी विरोधी हितबद्ध पक्षकार ने इस सम्बंध में कोई आयातित नहीं उठाई है। इसके आलोक में प्राधिकारी, याचिकाकर्ता कम्पनियों द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध क्षेत्र से आयातित विचाराधीन उत्पाद को पाटनरोधी नियमावली के अनुसार घरेलू समान वस्तु के रूप में मानता है।

घ. घरेलू उद्योग का दायरा एवं आधार

9. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के तहत घरेलू उद्योग को निम्नवत परिभाषित किया गया है:

“(ख) ‘घरेलू उद्योग’ का आशय समान वस्तु के विनिर्माण या उससे संबंधित किसी अन्य क्रियाकलाप में समग्र रूप से लगे उन सभी घरेलू उत्पादकों अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के समस्त घरेलू उत्पादन का एक बड़ा अनुपात बनता हो, सिवाय इसके कि जब ये उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हो, अथवा उसके स्वयं आयातक हो तो ऐसे मामलों में वाक्यांश ‘घरेलू उद्योग’ को देश उत्पादकों के रूप में माना जाएगा।

निर्यातकों/आयातकों/प्रयोक्ताओं तथा अन्य विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

10. निर्यातकों/आयातकों/प्रयोक्ताओं तथा अन्य विरोधी हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए हैं:-

- (i) पाटनरोधी नियमावली का नियम 2 (ख) ‘घरेलू उद्योग’ को घरेलू उत्पादकों को सम्बद्ध वस्तु के उत्पादकों के ‘सम्पूर्ण रूप से’ अथवा ‘प्रमुख अनुपात में उत्पादक के रूप में परिभाषित करता है। वर्तमान याचिका मैसर्स

ल्युपिन लिमिटेड द्वारा दायर की गई है तथा मै. अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड द्वारा उसका समर्थन किया गया है। याचिकाकर्ता का यह दावा कि उक्त वस्तु के केवल दो ही उत्पादक हैं अर्थात् मै. ल्युपिन लिमिटेड और मै. अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड तथ्यत्मक रूप से गलत है। आर्चिड लिमिटेड और सूर्या फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड भी सम्बद्ध वस्तु का उत्पादन करते हैं। इसके अतिरिक्त अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड ने केवल एक समर्थन पत्र प्रस्तुत किया है परंतु इसने क्षति संबंधी जानकारी प्रस्तुत नहीं की है। अतः, अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड को संविधि के आशय के अंतर्गत न ही समर्थनकर्ता के रूप में माना जा सकता है और न ही उसे घरेलू उद्योग माना जा सकता है। इस सम्बंध में चीन जन.गण. से "सीमलेस ट्यूब्स, पाइप्स, ढलवां लोहा के अलावा के संबंध में प्राधिकारी के जांच परिणाम पर भरोसा किया जा सकता है जिसमें जांच को इस आधार पर समाप्त कर दिया गया था कि समर्थनकर्ता ने अपनी कीमत निर्धारण तथा वित्तीय जानकारी प्रदान नहीं कराई थी। याचिकाकर्ता के आधार का निर्धारण सभी घरेलू उत्पादकों के उत्पादन पर विचार करने के पश्चात किया जा सकता है।

(ii) मैसर्स ल्युपिन लिमिटेड, याचिकाकर्ता की देश में कुल घरेलू उत्पादन के केवल एक छोटे से अनुपात की धारिता है। अरबिन्दो फार्मा का घरेलू उत्पादन में भारी अनुपात है। तथापि, जांच की अवधि के लिए सूचना हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध नहीं कराई गई है। पिछले वर्ष के उत्पादन आंकड़ों से संकेत प्राप्त करते हुए, यह साफ-साफ स्पष्ट है कि याचिकाकर्ता का घरेलू उत्पादन में बड़ा अनुपात नहीं है और इसलिए संविधि के आदेशों के अंतर्गत वह घरेलू उद्योग नहीं बनता है।

(iii) याचिकाकर्ता ने अद्यतनीकृत याचिका में प्राधिकारी द्वारा प्रस्तावित जांच अवधि के लिए व्यक्तिगत उत्पादकों द्वारा उत्पादन का ब्यौरा प्रदान नहीं किया है। मै. ल्युपिन लिमिटेड याचिकाकर्ता, देश में कुल घरेलू उत्पादन के केवल एक छोटे से हिस्से का उत्पादन करता है। याचिकाकर्ता को अकेले घरेलू उद्योग नहीं कहा जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी "अधिकांश अनुपात वाक्यांश का आशय, केवल उन मामलों को छोड़कर जहां बाजार असंगठित होती है, सभी घरेलू उत्पादकों से होता है।

(iv) यदि याचिकाकर्ता का उत्पादन जांच अवधि के दौरान कुल घरेलू उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक बनता है तब भी प्राधिकारी को चाहिए कि वे पिछले चार वर्षों की स्थिति का उद्देश्यपरक विश्लेषण करें जबकि उत्पादन का अधिकांश अनुपात अन्य घरेलू उत्पादक द्वारा धारित किया जाता है और धारित करते हैं याचिकाकर्ता संविधि के आशय के अंतर्गत 'घरेलू उद्योग' नहीं बनता है।

(v) याचिकाकर्ता का यह दावा कि सम्बद्ध वस्तु के अन्य उत्पादक जैसे यूनीमार्क, अरबिन्दो आदि ने ईयू से पाटन के कारण अपने प्रचालनों को बंद कर दिया है, तथ्यपरक रूप से गलत है। वास्तव में, मै. यूनीमार्क फार्मा (इंडिया) लिमिटेड अपना उत्पादन इसलिए जारी नहीं रख सके क्योंकि वस्तु का उत्पादन, सम्बद्ध वस्तु का उत्पादन करने के लिए उत्पादन लाइनों का प्रयोग करके उप इष्टतम माहौल में विनिर्माण का जा रहा था।

### घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

11. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए हैं:-

(i) याचिकाकर्ता और समर्थनकर्ता दोनों मिलकर घरेलू उद्योग बनते हैं।

(ii) मैसर्स यूनीमार्क ने सम्बद्ध वस्तु का उत्पादन वर्ष 2006-07 में करना बंद कर दिया और मैसर्स आर्चिड सम्बद्ध वस्तु का उत्पादन केवल निर्यात करने के लिए कर रहा था और बाजार में केवल उसी मात्रा को पेश कर रहा था जो ऐसी यूनिट के लिए नीति के अनुसार एक निर्यातोन्मुखी इकाई के लिए अनुमेय थी जो 15 से 30 टन प्रति वर्ष के बीच निर्धारित था। यूनीमार्क की प्रासंगिता है क्योंकि वे उन उत्पादकों में से एक हैं जिनपर राष्ट्रीय औषध कीमत निर्धारण प्राधिकरण ने विगत में अध्ययन करने के लिए विचार किया था, जिसके आधार पर 1 जुलाई, 2011 से इसकी कीमत 2951/-रुपये किग्रा निर्धारित की गई थी। इसके अतिरिक्त, यदि निर्यात करने में कुछ समस्या होती थी तो वे देश के अंदर अपनी बिक्री करना जारी रख सकते थे परंतु वे ऐसा नहीं कर सके क्योंकि पाटित वस्तुओं की कीमत असामान्य रूप से बहुत कम थी।

(iii) मै. सूर्या फार्मास्युटिकल्स सम्बद्ध वस्तु के बारे में कुछ समय से प्रचालन नहीं कर रहे थे।

(iv) याचिकाकर्ता ने प्राधिकारी को अपनी यूनिट तथा आवेदन का समर्थन करने वाली यूनिट अर्थात् मै. अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड के बारे में अवधिवार तथा माहवार उत्पादन का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया है। इस संबंध में कोई विवाद नहीं है कि आवेदक और उसका समर्थक घरेलू उद्योग हैं।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

12. मै. ल्यूपिन लिमिटेड ने वर्तमान मामलों में यूरोपियन यूनियन के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'सिफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेट' बल्क ड्रग के कथित पाटन का आरोप लगाते हुए एक आवेदनपत्र दायर किया है तथा पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने का अनुरोध किया है। मैसर्स अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड ने उनके आवेदनपत्र का समर्थन किया है और इस उद्देश्य के लिए सभी आंकड़ों/सूचना प्रदान कराई है। यह उल्लेख किया गया कि वे घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हैं क्योंकि संबद्ध वस्तु के अन्य उत्पादकों ने अपना उत्पादन पहले ही बंद कर दिया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि राष्ट्रीय औषध कीमत निर्धारण प्राधिकरण, औषध विभाग, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय द्वारा जांच की अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तु के उत्पादक के संबंध में प्रदान कराई गई जानकारी मै. अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड, जांच की अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन करते हैं। इस प्रकार, प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि आवेदक का, नियमावली के नियम 2 (ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग के रूप में स्पष्ट आधार है।

#### (ड.) विविध मुद्दे

#### निर्यातकों/आयातकों/प्रयोक्ताओं तथा अन्य विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

13. निर्यातकों/आयातकों/प्रयोक्ताओं तथा अन्य विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विविध प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं:-

(i) याचिकाकर्ता का अगोपनीय पाठ दर्ज करने में असाधारण विलम्ब हुआ

(ii) यह ज्ञात हुआ कि जांच की अवधि के लिए बिना किसी सूचना/साक्ष्य के जांच के प्रारंभ कर दी गई: याचिकाकर्ता ने 01.04.2010 से 31.12.2010 तक की नौ माह की अवधि को जांच की अवधि के रूप में मानते हुए पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंधों के बारे में सूचना प्रारंभ की। तथापि, प्राधिकारी ने जांच की अवधि 01.04.2010 से 30.09.2011 तक के 18 महीने को मानते हुए जांच प्रारंभ की। प्राधिकारी के पास



जांच शुरूआत के समय पूरी जानकारी नहीं थी। अतः यह जांच शुरूआत पाटनरोधी नियमावली का उल्लंघन करके प्रारंभ की गई थी।

(iii) अत्यधिक गोपनीयता: याचिकाकर्ता का अवांछित गोपनीयता का दावा और याचिका के पूर्णतया त्रुटिपूर्ण एवं अपर्याप्त अगोपनीय पाठ ने प्रतिवादी के सार्थक प्रत्युत्तर को दायर करने के अधिकार को विपरीत ढंग से प्रभावित किया है। याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादन की मात्रा, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा तथा उत्पादन लागत, बिक्री कीमत और लाभ का गोपनीय के रूप में दावा किया गया है जबकि उनको गोपनीय के रूप में दावा करने का न तो कोई कारण प्रदान किया गया है और न ही उसका कोई अगोपनीय सार प्रदान किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा यह सूचना प्रदान कर दिए जाने के पश्चात निर्यातकों को अपने विचारों की सुनवाई किए जाने का एक अन्य अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।

(iv) याचिका के अगोपनीय पाठ में प्रपत्र-ivक नहीं है। प्रपत्र-ivक के बिना याचिकाकर्ता द्वारा सहन की गई किसी भी क्षति के लिए कोई सार्थक टिप्पणी देना संभव नहीं होगा।

#### घरेलू उद्योग द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण

14. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए हैं:-

(i) आंकड़े प्रपत्र-ivक में प्रदान कराए गए थे और यहां तक कि अद्यतन प्रपत्र ivक भी प्रदान कराया गया था। इसके अतिरिक्त, अगोपनीय पाठ में किया गया प्रकटन सुस्थापित प्रक्रिया के अनुरूप था। प्रतिवादियों ने कहीं भी उस कीमत का खुलासा नहीं किया है जो डीएसएम विभिन्न देशों को तथा भारत के अंदर डीएसएम इंडिया को तथा अन्य आयातकों को प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने कोई सार्थक प्रकटन भी नहीं किया है। घरेलू उद्योग इस मुद्दे पर उनके साथ प्रतिस्पर्धा करना नहीं चाहता है परंतु यह एक तथ्य है कि उन्होंने महत्वपूर्ण जानकारी रोक रखी है।

(ii) उनके कार्य किसी तथ्य अथवा आंकड़ों द्वारा साक्ष्यांकित नहीं हैं। कीमतों का निर्धारण उत्पादन लागत के आधार पर किया जाता है और घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी को विवरण निर्धारित की गई कीमत, इसकी उत्पादन लागत तथा देश और विदेश दोनों में बिक्री प्रापण को दर्शाते हुए प्रस्तुत किया है जिससे अधिसूचित कीमत तथा गैर-क्षतिकारी कीमत के आधार पर पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को कारित की गई क्षति का पर्याप्त प्रमाण मिलता है।

(iii) यह सुझाव देना कि क्षति पैरामीटरों का निर्धारण निर्णीत मामलों के आधार पर बल्क ड्रग की अधिसूचित कीमतों के संदर्भ में किया जाना चाहिए, पूरी तरह अनुचित एवं गैर न्यायोचित है जबकि यह ज्ञात है कि सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेट की कीमतें अधिसूचित किए जाने के पश्चात डालर की विनिमय दर बढ़ गई है तथा नई प्रस्तावित नीति के अंतर्गत बल्क भेषजों पर कीमत नियंत्रण वापस लिया जा रहा है। इस मुद्दे की गुणावगुणों के आधार पर जांच किए जाने की आवश्यकता है क्योंकि अधिसूचित कीमत कच्चे माल एवं उपयोग की गई वस्तुओं की लागत पर आधारित होती हैं जो परिवर्तनशील तत्व होते हैं क्योंकि अधिसूचना की तारीख पर और उसके उत्तरवर्ती समय पर परिवर्तनशील लागत में बदलाव को गैर क्षतिकारी कीमत के संदर्भ में क्षति पैरामीटरों का अध्ययन न्यायोचित एवं निष्पक्ष ढंग से करने के लिए विचार किया जाना चाहिए। यदि इन पहलुओं को ध्यान में नहीं रखा जाता है तो सारकार्य व्यर्थ हो जाएगा। लागत समय सीमा के बंधन के बिना सभी समय पर स्थिर नहीं होती है। यह दरों तथा खपत मानकों में परिवर्तनशीलता के कारण एक अवधि से दूसरी अवधि में

अलग-अलग होती है जिसे इन अध्ययनों के लिए अनुमोदित पैरामीटरों के अनुरूप हस्तगत उद्देश्य के लिए गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण करने हेतु स्थिर स्तर पर रखा जा सकता है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

15. जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रपत्र ivक में सूचना प्रस्तुत किए जाने का सम्बंध है, प्राधिकारी सम्पुष्ट करते हैं कि अपेक्षित जानकारी दोनों याचिकाकर्ताओं अर्थात् मैसर्स ल्यूपिन लिमिटेड और मै. अरबिन्दों फार्मा लिमिटेड, द्वारा उपलब्ध करा दी गई थी। प्रपत्र ivक की अगोपनीय प्रति भी विरोधी पक्ष को उपलब्ध करा दी गई थी।

16. जहां तक सम्पूर्ण क्षति अवधि के लिए क्षति पैरामीटरों के संबंध में उपलब्ध न कराई गई जानकारी का सम्बंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रारंभ में याचिकाकर्ता ने जांच की अवधि का प्रस्ताव 1 अप्रैल, 2010 से 31 दिसम्बर, 2010 तक का करके जांच प्रारंभ करने का आवेदन प्रस्तुत किया था। इसके पश्चात् इस आवेदन पत्र में कई पैरामीटरों के संबंध में त्रुटियां नोट की गईं। तदनुसार, याचिकाकर्ता कम्पनी से अनुरोध किया गया कि वह, जांच की शुरुआत किए जाने से पहले, जांच के लिए आयातों तथा अन्य पैरामीटरों के अद्यतन आंकड़ों सहित अतिरिक्त जानकारी प्रस्तुत करे। वर्तमान जांच की शुरुआत जांच की संशोधित अवधि 01 अप्रैल, 2010 से 30 सितम्बर, 2011 तक के सभी संगत पैरामीटरों के संबंध में घरेलू उद्योग के संपूर्ण आंकड़े प्राप्त हो जाने तथा प्राधिकारी द्वारा पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंधों की मौजूदगी के संबंध में प्रथमदृष्टया संतुष्ट हो जाने के उपरांत ही की गई थी।

17. जहां तक अत्यधिक गोपनीयता का सम्बंध है, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई सूचना की प्राधिकारी द्वारा गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने, यथा अपेक्षित, गोपनीयता का अनुमोदन कर दिया और उस जानकारी को गोपनीय के रूप में माना गया तथा उसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया। गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को, यथासंभव सीमा तक, गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय पाठ भी प्रस्तुत करने का निदेश दिया गया।

#### च. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए क्रियापद्धति सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोपियन यूनियन के उत्पादकों/निर्यातकों ने तर्क दिया है कि पाटन मार्जिन का निर्धारण घरेलू बाजार में की गई बिक्री तथा निर्यात बाजार में की गई बिक्री के बीच "व्यापार के स्तर" अंतर का समायोजन करने के पश्चात् किया जाना चाहिए। डीएसएम नीदरलैंड्स ने सम्बद्ध वस्तु की बिक्री घरेलू बाजार अर्थात् यूरोपियन यूनियन में, सीधे अंतिम प्रयोक्ता को की है। तथापि, इसने भारत को निर्यात अपनी सम्बद्ध कम्पनी डीएसएम इंडिया को किया जिसने बदले में इस उत्पाद की पुनर्बिक्री भारत में अपने असम्बद्ध अंतिम उपभोक्ताओं को की। अतः डीएसएम इंडिया ने भारत में इस उत्पाद के थोक विक्रेता/वितरक के स्तर के लिए उपयुक्त समायोजन प्रदान किया जाना चाहिए।

#### उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण

19. डीएसएम नीदरलैंड्स तथा डीएसएम स्पेन द्वारा अपनी-अपनी प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में प्रदान कराई गई जानकारी का प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया। डीएसएम नीदरलैंड्स, 7-एडीसीए तथा और एन्जाइम्स का विनिर्माण डेल्फिट नीदरलैंड्स नामक अपने संयंत्र में करता है। सम्बद्ध वस्तु का विनिर्माण किए जाने के लिए अपेक्षित अन्य कच्चे माल/इनपुटों के साथ-साथ इनकी आपूर्ति डीएसएम स्पेन को की जाती है। डी एसएम स्पेन, सम्बद्ध वस्तु का अपने स्पेन स्थित संयंत्र में विनिर्माण करने के लिए अन्तिम विनिर्माण प्रक्रिया का आयोजन करता है। अंतिम विनिर्माण प्रक्रिया करने के लिए डीएसएम स्पेन टोलिंग शुल्क प्राप्त करता है। सम्बद्ध वस्तु की बिक्री डीएसएम नीदरलैंड्स द्वारा ईयू के अंतर्गत अपनी घरेलू बाजारों में अथवा ई यू के बाहर निर्यात बाजारों में की जाती है।

20. डीएसएम, नीदरलैंड्स ने यूरोपियन यूनियन की घरेलू बाजारों में की गई बिक्री तथा भारत को किए गए निर्यात का विवरण प्रस्तुत किया है। डीएसएम, नीदरलैंड्स ने संबद्ध वस्तु की बिक्री अपनी संबंधित कंपनी डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स इंडिया प्रा. लिमिटेड (डीएसएम इंडिया) को की है, जिसने पुनः इस सम्बद्ध वस्तु की बिक्री भारत में अंतिम उपभोक्ता को की है। ई यू की घरेलू बाजारों में, डीएसएम नीदरलैंड्स ने सम्बद्ध वस्तु की बिक्री प्राथमिकतः एसीएस, डीओबीएफएआर एस.पी.ए. इटली (जो सम्बद्ध वस्तु का पुनर्बिक्रीकर्ता है) और सैण्डोज जीएमबीएच (जो सम्बद्ध वस्तु का विरूपणकर्ता/अंतिम प्रयोक्ता है) को की है। डीएसएम नीदरलैंड्स ने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह पाटन मार्जिन का परिकलन करने के लिए डीएसएम इंडिया को की गई निर्यात कीमतों की तुलना एसीएस डोबफार को की गई बिक्री कीमत से करें क्योंकि दोनों ही व्यापार के समान स्तर पर कार्य कर रहे हैं। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी की यह सामान्य परम्परा रही है कि प्राधिकारी विभिन्न प्रकार की बिक्रियों अर्थात् पुनर्बिक्रीकर्ता अथवा अन्तिम प्रयोक्ता को की गई बिक्रियों में भेद नहीं करते हैं और व्यापार समायोजन के स्तर की अनुमति न देने की सामान्य प्रक्रिया से विचलित नहीं होते हैं। अतः प्राधिकारी ने इस मामले में व्यापार समायोजन के स्तर की अनुमति न देने का निश्चय किया है और तदनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए सभी घरेलू बिक्रियों पर विचार किया है।

21. डीएसएम नीदरलैंड्स ने घरेलू बिक्री कीमतों से अंतरदेशीय परिवहन, बीमा, ऋण लागत, डिस्काउण्ट तथा बैंक प्रभारों के कारण घरेलू बिक्री कीमतों से समायोजन करने का दावा किया है। व्ययों को वास्तव में किए गए व्ययों पर आधारित सीमा तक तथा सत्यापन किए गए के अनुरूप अनुमति दी गई है। प्राधिकारी ने उत्पादन लागत की तुलना घरेलू बिक्री कीमत के साथ करके यह भी जांच की है कि क्या घरेलू बिक्रियां व्यापार के सामान्य अनुक्रम में हैं या नहीं। जांच से यह व्यक्त हुआ कि डीएसएम नीदरलैंड्स द्वारा की गई घरेलू बिक्रियां व्यापार के सामान्य अनुक्रम में हैं। कटौतियों की अनुमति दिए जाने के पश्चात सम्बद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य का निर्धारण \*\*\* अमरीकी डालर प्रति किग्रा के रूप में किया गया है।

#### उत्पादकों एवं निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण

22. डीएसएम नीदरलैंड्स ने भारत को जांच की अवधि के दौरान सीआईएफ/सीआईपी आधार पर \*\*\* किग्रा. वस्तु का निर्यात किया है जिसका कुल मूल्य \*\*\* अमरीकी डालर है। इसमें से \*\*\* किग्रा, जिसका कुल मूल्य \*\*\* अमरीकी डालर है, का निर्यात सीधे डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स इंडिया प्रा. लिमिटेड को किया गया है। देश \*\*\* किग्रा, जिसका कुल मूल्य \*\*\* अमरीकी डालर था, का भारत को निर्यात मिस्र स्थित इसकी एक सम्बद्ध कम्पनी, डीएसएम एण्टी इन्फेक्टिब्ज मिस्र, एसईई के जरिए किया गया है।

23. सी.आई.एफ./सीआईपी निर्यात कीमतों से समायोजन का दावा फैक्टरी बाह्य निर्यात कीमतों पर पहुंचने के लिए भाड़ा, बीमा, ऋण लागत और बैंक प्रभारों के आधार पर किया गया है। निर्यात कीमत से समायोजन की अनुमति वास्तविक के अनुरूप तथा प्राधिकारी द्वारा किए गए सत्यापन के अनुरूप की गई है। तदनुसार, फैक्टरी बाह्य निर्यात कीमत का निर्धारण \*\*\* अमरीकी डालर प्रति किया के रूप में किया गया है।

24. आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नलिखित तालिका में दिए गए के अनुरूप किया जाता है:

उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य (अम.डा. में)	निर्यात कीमत (अम.डा. में)	पाटन मार्जिन (अम.डा. में)	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज
मै. डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स नीदरलैण्ड्स बी वी नीदरलैण्ड्स	मै. सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स नीदरलैण्ड्स बी वी नीदरलैण्ड्स /मै. डीएसएम एण्टी इन्फेक्टिब्ज इजिप्ट एसएई	*** प्रति किया.	*** प्रति किया.		***%	12-22%
कोई अन्य उत्पादक	कोई अन्य निर्यातक	*** प्रति किया.	*** प्रति किया.	***	***%	16-25%

क्षति का आकलन एवं कारणात्मक सम्बंध की जांच

छ. क्षति

25. निर्यातकों/आयातकों तथा अन्य विरोधी हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया कि:

(i) प्राधिकारी द्वारा क्षति विश्लेषण अरबिन्दो फार्मा के भी वित्तीय एवं कीमत निर्धारण आंकड़ों पर विचार करते हुए किया जाना चाहिए।

(ii) सम्बद्ध वस्तु की कीमतों को भेषज (कीमत नियंत्रण) आदेश, 1975 द्वारा षासित किया जाता है। याचिकाकर्ता की उत्पादन लागत पर ध्यान दिए बिना सम्बद्ध वस्तु की बिक्री डीपीसीओ की कीमतों से अधिक कीमतों पर नहीं की जा सकती है। अतः, घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत (एनआईपी) डीपीसीओ कीमतों से अधिक नहीं होगी। इसलिए जांच की अवधि के दौरान प्रचलित भेषज कीमत नियंत्रण आदेश कीमतों पर ही विचार

किया जाना चाहिए और जांच की अवधि के पश्चात किसी उत्तरवर्ती वृद्धि पर, प्राधिकारी द्वारा गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण करने के लिए विचार नहीं किया जाना चाहिए।

(iii) क्षति पैरामीटरों का निर्धारण करने के लिए डीएसएम इंडिया की पुनर्बिक्री कीमतों पर विचार किया जाना चाहिए।

(iv) पाटनरोधी शुल्क का आशय आयातित वस्तु की घरेलू उत्पादकों की कीमत से कम कीमत पर घरेलू बाजार में बिक्री करने के कारण घरेलू उद्योग द्वारा सहन की गई किसी भी क्षति का उपचार करना है। घरेलू उत्पादकों की गैर-क्षतिकारी कीमत की तुलना उन कीमतों से करनी होती है जिनपर आयातित उत्पाद वास्तव में घरेलू रूप से विनिर्मित उत्पादों से प्रतिस्पर्धा कर रहे होते हैं। समान स्तर पर उन दो कारकों के बीच हमेशा तुलना की जाती है जिन्हें व्यापार की बोलचाल में 'व्यापार के समान स्तर' के रूप में जाना जाता है। यदि गैर-क्षतिकारी कीमत ही वह अंतिम कीमत है जिस पर ग्राहक अथवा उपांतिम डीलर फैक्टरी बाह्य उत्पाद प्राप्त करेगा, तो तुलनीय निर्यात कीमत का निर्धारण भी अनिवार्य रूप से केवल उसी स्तर पर किया जा सकेगा। घरेलू उद्योग के लिए गैर-क्षतिकारी कीमत में, घरेलू उद्योग द्वारा वहन किए गए बाह्य किराया प्रभारों के अलावा, घरेलू उत्पादक द्वारा उत्पाद का उत्पादन करने तथा उसकी बिक्री करने पर किया गया व्यय शामिल होता है। दूसरे शब्दों में, गैर क्षतिकारी कीमत, भारत में ग्राहकों को सुपुर्दगी के लिए उत्पाद की फैक्टरी बाह्य कीमत होती है। अतः, निर्यातित वस्तुओं के लिए व्यापार के समान स्तर पर कीमतों की तुलना करने हेतु उन कीमतों पर विचार किया जाता है।

(v) डीएसएम नीदरलैंड्स सम्बद्ध वस्तु का निर्यात भारत में केवल अपने संबंधित आयातक अर्थात् डीएसएम इंडिया को ही करता है जो बदले में इस वस्तु की भारत में पुनर्बिक्री, भारत में बिक्री एवं प्रशासनिक व्यय करने के पश्चात, करता है। यह व्यय अन्य बातों के साथ-साथ, उत्पाद का विपणन करने के लिए किए जाते हैं, और इसलिए, यह व्यय वस्तु अंतिम ग्राहक को बिक्री के लिए तैयार होने से पहले किए जाते हैं। अतः वह कीमत जिसपर भारत में अंतिम ग्राहक आयातित वस्तु प्राप्त कर सकता है, वह कीमत होती है जिस पर डीएसएम इंडिया, भारत में इन आयातित वस्तुओं की पुनर्बिक्री करता है। यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि जहां आयातक और निर्यातक एक दूसरे से जुड़े होते हैं वहां निर्दिष्ट प्राधिकारी इन निर्यातकों एवं आयातकों को एक एकल निकाय के रूप में मानते हैं और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए निर्यात कीमत का परिकलन संबंधित आयातक की पुनर्बिक्री कीमत के आधार पर करते हैं।

(vi) पाटनरोधी नियमावली के नियम 4(घ) के अनुसार, प्राधिकारी का यह कर्तव्य है कि वह केन्द्रीय सरकार से पाटन के मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करें जो यदि अधिरोपित की जाती है तो घरेलू उद्योग की क्षति को दूर कर देगी। यह प्रस्तुत किया जाता है कि डीपीसीओ कीमतों की न्यूनतर कीमतों और याचिकाकर्ता की गैर क्षतिकारी कीमतों तथा डीएसएम इंडिया की पुनर्बिक्री कीमतों के बीच अंतर के आधार पर क्षतिमार्जिन याचिकाकर्ता द्वारा सहन की गई क्षति, यदि कोई है तो, को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा क्योंकि आयातित वस्तुएं घरेलू रूप से विनिर्मित वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा केवल उसी स्तर पर करती हैं जिस स्तर पर उनकी भारत में पुनर्बिक्री की जाती है।

(vii) याचिकाकर्ता द्वारा सम्बद्ध वस्तु का उत्पादन करने के लिए प्रयोग की गई विनिर्माण सुविधा का प्रयोग एक अन्य बल्क ड्रग 'सीफालेक्सिन' का उत्पादन करने के लिए भी किया जा सकता है। प्रतिवादियों के ज्ञान में, याचिकाकर्ता तथा अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड दोनों एकही संयंत्र से अदल-बदल कर 'सीफाड्राक्सिल' तथा

'सीफालेक्सिन' का उत्पादन करते हैं। प्रतिवादीगण यह भी मानते हैं कि सम्बद्ध वस्तु के लिए याचिका में प्रकट की गई क्षमता सम्बद्ध वस्तु और सीफालेक्सिन के लिए संयुक्त क्षमता है न कि केवल सम्बद्ध वस्तु के लिए। अगर यह मान भी लिया जाए कि याचिकाकर्ता द्वारा अपनी याचिका में उल्लेख की गई क्षमता केवल अकेले 'सीफालेक्सिन' से संबंधित है तो भी यह प्रस्तुत किया जाता है कि देश में उपलब्ध उत्पादन क्षमता घरेलू मांग की तुलना में बहुत कम है। जांच की अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तु की भारत में मांग 581 मी.टन थी। इसकी तुलना में, याचिकाकर्ता के पास उपलब्ध क्षमता केवल 306 मी.टन ही थी। यह दर्शाता है कि देश में सम्बद्ध वस्तु की मांग की तुलना में क्षमता बहुत कम है। यह स्थिति जो अन्य देशों से आयात करना अनिवार्य बना देती है। घरेलू उत्पादकों के पास देश की कुल मांग को पूरा करने की क्षमता नहीं है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि ऐसी परिस्थितियों में पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करना औषध कंपनियों के हित पर विपरीत प्रभाव डालेगा, जिसका परिणाम यह होगा कि देश में औषधियों की कीमत बढ़ जाएगी।

(viii) कथित पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

(ix) याचिकाकर्ता ने स्वयं यह उल्लेख किया है कि जांच की अवधि के दौरान आयातों की उतराई कीमत उनकी बिक्री कीमत से 5-10 प्रतिशत कम है। प्रतिवादियों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावलियों के प्रत्युत्तरों से यह देखा जा सकता है कि डीएसएम इंडिया की पुनर्बिक्री कीमत (वह कीमत जिस पर आयातित वस्तुएं घरेलू रूप से विनिर्मित वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा करती हैं) आयात कीमत से 10 प्रतिशत अधिक हैं। अतः, इससे यह स्पष्ट होता है कि आयातित वस्तुओं की पुनर्बिक्री कीमत, याचिकाकर्ता की बिक्री कीमत की तुलना में अधिक है।

(x) याचिकाकर्ता घरेलू उत्पादक को वर्ष 2009-10 अर्थात् जांच की अवधि से तुरंत पहले के वर्ष के दौरान से ही घाटा होना पारंभ हो गया था। तथापि, इस वर्ष के दौरान, डीएसएम इंडिया ने आयातित वस्तुओं की भारतीय बाजारों में बिक्री डीपीसीओ कीमतों पर की थी। जब वस्तु की बिक्री डीपीसीओ द्वारा निर्धारित कीमतों पर की गई है तो घरेलू उद्योग को कथित पाटित आयातों के कारण किसी भी प्रकार की क्षति हो ही नहीं सकती है। ऐसे मामले में, आयातों तथा वस्तु की याचिकाकर्ता द्वारा बिक्री कीमत के बीच कोई सम्बंध नहीं हो सकता है। कारणात्मक सम्बंध के अभाव में यह अनुरोध किया जाता है कि यह जांच समाप्त कर दी जानी चाहिए।

(xi) घरेलू बाजार में प्रमुख हिस्सा अन्य घरेलू उत्पादक अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड का है। याचिकाकर्ता तथा अन्य घरेलू उत्पादक के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा के कारण याचिकाकर्ता को अपनी कीमतें कम करनी पड़ीं और इसका कारण उसे क्षति हुई। यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड द्वारा किए गए उत्पादन की मात्रा और उत्पादित वस्तु की कीमत तथा बिक्री के कारण याचिकाकर्ता को हुई क्षति की जांच करें।

(xii) याचिकाकर्ता द्वारा सम्बद्ध वस्तु की बिक्री जिन कीमतों पर की जा सकती है, उन पर सरकार का, डीपीसीओ, 1975 के जरिए नियंत्रण है। इसका आशय यह हुआ कि यदि सरकार द्वारा निर्धारित डीपीसीओ कीमत 100/- रुपये है और यदि वस्तु का उत्पादन और उसकी बिक्री करने की लागत 120/-रुपया है तो याचिकाकर्ता को अपनी वस्तु की बिक्री 100/- रुपये पर करने और 20/-रुपये का घाटा सहन करने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं रह जाता है। इस प्रकार, क्षति के लिए किसी भी रूप में आयातों को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है। याचिकाकर्ता को हुई क्षति का प्राथमिक कारण सम्बद्ध वस्तु की बिक्री कीमत का डीपीसीओ के जरिए सरकार द्वारा नियंत्रित किया जाना है।

(xiii) पाटनरोधी शुल्क, यदि कोई, का अधिरोपण संदर्भ कीमत आधार पर किया जाना चाहिए।

26. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि-

- (क) सम्बद्ध क्षेत्र से आयातों में समग्र रूप से तथा भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में वृद्धि हुई है।
- (ख) सम्बद्ध देशों से आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का पर्याप्त सीमा तक अधोरदन कर रहे हैं।
- (ग) उत्पादन की लागत में वृद्धि हो रही थी, वहीं बिक्री कीमत में गिरावट आ रही थी। पुनश्च, प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन लागत में कुछ कमी होने के बावजूद कीमतों में गिरावट इसकी लागत की गिरावट की तुलना में बहुत अधिक थी। समग्र रूप से, आयातों से घरेलू कीमतों का निग्रहण एवं अवनमन हो रहा है।
- (घ) मांग में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है।
- (ङ.) लाभ, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आ रही थी और जांच की अवधि में यह ऋणात्मक हो गया था।
- (च) पाटन की सीमा के एक साधन के रूप में पाटन मार्जिन बहुत अधिक है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

27. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली का नियम 11, यह प्रावधान करता है कि क्षति का निर्धारण करने में उन कारकों की जांच की जा सकती है जिनसे " ..... सभी संगत तथ्यों जिनमें पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनका प्रभाव और इन वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव शामिल हैं, को ध्यान में रखते हुए ..... "घरेलू उद्योग को क्षति का संकेत मिलता हो। पाटित आयातों का कीमतों पर प्रभाव पर विचार करते हुए यह जांच करना जरूरी समझा जाता है कि क्या पाटित आयातों द्वारा, भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में, भारी अधोरदन किया गया है और क्या इन आयातों बढ़ने से रोकता, जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुआ होता।

28. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले देशों को जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदायकता, निवल बिक्री प्रापण, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि जैसे कारकों पर नियमावली के अंतर्गत बने नियम के अनुबंध- II में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा घरेलू बाजार में समान वस्तुओं के लिए पाटित आयातों का कीमतों पर प्रभाव, और (ख) इन आयातों का ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर परिणामी प्रभाव दोनों की उद्देश्यपरक जांच किए जाने का प्रावधान है। पाटित आयातों के मात्रा प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा उत्पादन के संगत रूप से या भारत में खपत के रूप में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में पाटित आयातों द्वारा पर्याप्त अधोरदन किया जा रहा है या क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का अन्यथा काफी हद तक अवनमन कर रहा है अथवा कीमतों को बढ़ने से रोक रहा है जो अन्यथा काफी बड़ी मात्रा में घटित हुआ होता।

30. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों पर विचार किया और उनका समुचित निराकरण किया। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विशिष्ट प्रस्तुतिकरणों का, प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग की क्षति पैरामीटरों की जांच करते समय, समुचित स्थानों पर समाधान किया गया है।

31. घरेलू उद्योग की क्षति पैरामीटरों के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए विशिष्ट मुद्दों के संबंध में प्राधिकारी ने इस मामले में निम्नलिखित जांच की है:-

(क) प्राधिकारी द्वारा क्षति विश्लेषण, आवेदक कम्पनियों मै.ल्युपिन लिमिटेड तथा मै. अरबिन्दो फार्मा द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना/आंकड़ों के आधार पर किया गया तथा उसका आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया।

(ग) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के प्रावधानों के अनुसार किया है। पुनश्च, घरेलू उद्योग के लिए गैर क्षतिकारी कीमत का विश्लेषण प्रचलित डीपीसीओ कीमतों पर किया गया। यहां किए गए उल्लेख के अनुसार, प्राधिकारी द्वारा न्यूनतर गैर क्षतिकारी कीमत तथा डीपीसीओ कीमत पर विचार किया गया।

घ. सम्बद्ध वस्तु, जिसकी कीमतों पर डीपीसीओ के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा नियन्त्रण रखा जा रहा है, के कारण घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निर्धारण अलग से किया गया है ताकि सम्बद्ध वस्तु का पाटन किए जाने के कारण होने वाली क्षति का परिमाणीकरण किया जा सके।

ड. चूंकि घरेलू उद्योग के लिए गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण फैक्ट्री बाह्य स्तर पर किया गया है इसलिए उसकी तुलना नियमावली के प्रावधानों के अनुसार तथा ऐसे मामलों में प्राधिकारी द्वारा अपनाई जा रही संगत प्रक्रिया के अनुसार तथा नियमावली के प्रावधानों के अनुसार आयातों की उतराई कीमत से की गई है।

च. निर्यातकों का यह तर्क कि घरेलू उद्योग के पास भारत में मांग को पूरा करने की पर्याप्त क्षमता नहीं है, गलत है क्योंकि पाटनरोधी जांच का उद्देश्य आयातों पर प्रतिबंध लगाना नहीं है बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि संबद्ध वस्तु के आयात उचित मूल्यों पर हों।

छ. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क की जांच की गई कि सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेड और साइफेक्सामाइन में अदल बदल कर प्रयोग किये जाने की क्षमता है और प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की गैरक्षतिकारी कीमत का निर्धारण करने और क्षति विश्लेषण करने के उद्देश्य से केवल सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेड की क्षमता पर ही विचार किया।

#### छ.1 पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव और घरेलू उद्योग पर उनका प्रभाव

क) आयात मात्रा तथा सम्बद्ध देश का हिस्सा

32. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नलिखित उल्लेख किया गया है:



“संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संगत आर्थिक कारकों तथा देशानांकों का मूल्यांकन करना शामिल होता है जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है, इसमें शामिल है बिक्री में प्राकृतिक एवं संभावित गिरावट, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर अर्जन या क्षमता उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन का विस्तार, नकदी प्रभाव पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, वेतन, वृद्धि, पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता।”

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)	जांच की अवधि-वार्षिकीकृत
आयात -						
यूरोपियन यूनियन	मी.टन	124.19	161.70	136.67	287.25	191.00
अन्य देश	मी.टन	6.6	0	9.8	0	0
कुल आयात	मी.टन	130.80	161.70	146.50	287.23	191.00
आयातों में बाजार हिस्सा						
यूरोपियन यूनियन	%	95.38	100.00	93.29	100	100.00
अन्य देश	%	4.62	0	6.71	0	0

33. यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान यूरोपियन यूनियन से आयातों में समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई जो 2007-08 में 124.19 मी.टन थे बढ़कर जांच की अवधि के दौरान 287.25 मी.टन (191 मी.टन वार्षिकीकृत) हो गये। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि क्षति अवधि में यूरोपियन यूनियन के अलावा अन्य देशों से आयात महत्वहीन रहा है।

#### ख) मांग और बाजार हिस्से का आकलन

34. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मांग का निर्धारण घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री, अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री और सभी स्रोतों से भारत को सम्बद्ध वस्तु के आयातों के योग के रूप में किया है। इस तरह आकलित की गई मांग निम्नलिखित तालिका में दर्शायी गयी है। यह देखा जाता है कि सम्बद्ध वस्तु की आधार वर्ष की तुलना में

वर्ष 2008-09 में मांग में भारी वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, उत्तरवर्ती वर्ष तथा जांच की अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तु की मांग में कोई विदेश परिवर्तन नहीं हुआ है।

मांग	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)	जांच की अवधि-वार्षिकीकृत
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.टन	112.02	189.57	192.78	207.64	138.45
अन्यों की बिक्री	मी.टन	35.15	57.17	30.27	64.10	42.73
यूरोपियन यूनियन-आयात	मी.टन	124.19	161.70	136.67	287.25	191.69
अन्य देश-आयात	मी.टन	6.6	0	9.8	0	-
कुल मांग	मी.टन	277.96	408.44	369.55	558.96	372.64
प्रवृत्ति		100	145	133	201	-
मांग में बाजार हिस्सा						
घरेलू उद्योग	%	40.30	46.41	52.17	37.15	37.15
यूरोपियन यूनियन-आयात	%	44.68	39.59	36.98	51.39	51.39
अन्य देश-आयात	%	2.37	0.00	2.65	0.00	

35. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कुल मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा आधार वर्ष के दौरान 40.30 प्रतिशत था घटकर जांच की अवधि के दौरान 37.15 प्रतिशत रह गया। दूसरी ओर, सम्बद्ध क्षेत्र से आयातों के बाजार हिस्से में 44.68 प्रतिशत से वृद्धि होकर 51.39 प्रतिशत हो गया। प्राधिकारी यह पुनः नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तु के लिए मांग में वृद्धि हुई है फिर भी सम्बद्ध क्षेत्र से आयातों की मात्रा में वृद्धि घरेलू उद्योग की बिक्री की प्रमात्रा में हुई वृद्धि की तुलना में बहुत अधिक है।

#### छ.2. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

##### क) कीमत अधोरदन

36. पाटित आयातों के कीमतों पर प्रभाव के संबंध में नियमावली के अनुबंध-II(ii) में निम्नलिखित निर्धारित किया गया है:

“नियम 18 के उपनियम (2) में यथाउल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत के साथ तुलना करने पर पाटित आयातों द्वारा कीमत अधोरदन बहुत अधिक है अथवा इन आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में अन्यथा अवनमन करता जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुआ होता।”

37. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में यह जांच की गई है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों के साथ तुलना करने पर पाटित आयातों द्वारा भारी मात्रा में कीमत अधोरदन किया जा रहा है या क्या इन आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों का भारी मात्रा में अवनमन करता अथवा कीमतों में बढ़ोतरी होने से रोकता जो अन्यथा भारी मात्रा में हुई होती। इस संबंध में, संबंधित उत्पाद के उतराई मूल्य और घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत के साथ, इन सभी छूटों और करों के निवल के रूप में तुलना की गई। घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण फैक्टरी बाह्य स्तर पर किया गया था। यह तुलना दर्शाती है कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देश के मूल की संबद्ध वस्तु का भारतीय बाजारों में आयात घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम कीमत पर किया गया। अतः, यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु के आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे थे और यूरोपियन यूनियन से आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहा था और यूरोपियन यूनियन से आयातों के मामले में अधोरदन का मार्जिन बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

38. इस कीमत अधोरदन मार्जिन का निर्धारण निम्नवत किया गया है:

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)
निवल बिक्री कीमत	रुपये/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	110.13	106.15	101.74
आयातों की उतराई कीमत	रुपये/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	131.72	97.85	95.03
कीमत अधोरदन	रुपये/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रैंज	0-2%	(10-25%)	3-10%	5-15%

39. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2008-09 के दौरान बिक्री कीमत तथा संबद्ध क्षेत्र से आयातों की उतराई कीमत में वृद्धि हुई थी। इस अवधि के दौरान जहां घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई वहीं आयातों की उतराई कीमत में यह वृद्धि 32 प्रतिशत से अधिक थी। इसके पश्चात की अवधि में, आयातों के उतराई कीमत में भारी वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट मामूली सी ही आई थी। इसके परिणामस्वरूप, वर्ष 2007-08 तथा 2008-09 के दौरान आयातों द्वारा अधोरदन ऋणात्मक था वहीं इसमें वर्ष 2009-10 तथा जांच की अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई।

ख) कीमत निग्रहण तथा अमंदन

40. यह जांच करने के लिए कि क्या पाटित आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में अवमंदन करने अथवा कीमतों की वृद्धि को रोकने के लिए है, जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुआ होता, घरेलू उद्योग की लागत और बिक्री कीमत के उतार चढ़ाव तथा सम्बद्ध क्षेत्र से आयातों के उतराई मूल्य की तुलना क्षति अवधि से की गई। इस संबंध में प्रवृत्ति का विवरण संक्षेप में निम्नलिखित है:

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)
आयातों की उतराई कीमत	रूपये/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	131.72	97.85	95.03
निवल बिक्री कीमत	रूपये/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	110.13	106.15	101.74
बिक्री लागत	रूपये/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	96.49	90.51	102.09

41. वर्ष 2008-09 के दौरान जहां घरेलू उद्योग की बिक्री लागत में गिरावट आयी वहीं घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत 10 प्रतिशत अधिक हो गयी। दूसरी ओर, उसी अवधि के दौरान आयातों के उतराई मूल्य में 32 प्रतिशत के उच्चतर प्रतिशत तक भारी वृद्धि हुई। आयातों की उतराई कीमत, बिक्री लागत तथा घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत को प्रवृत्ति का विश्लेषण करने पर, जैसा कि उपर किया गया है, प्रथम दृष्टया संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण कीमत निग्रहण अथवा अवमंदन का कोई साक्ष्य नहीं सुझाया गया है।

ग) गैर क्षतिकारी कीमत तथा डीपीसीओ कीमतों की तुलना

42. भारत सरकार द्वारा डीपीसीओ के अंतर्गत यथा अधिसूचित कीमतों की तुलना घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमतों के साथ करने से यह संकेत मिलता है कि डीपीसीओ कीमतें घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमतों की तुलना में मामूली सी कम हैं। अतः प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का एक भाग संबद्ध वस्तु की कीमतों पर सरकारी नियंत्रण होने को भी उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। तथापि, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निर्धारण करने के प्रयोजन से आयातों की उतराई कीमत की तुलना दोनों, अर्थात् जांच की अवधि के दौरान डीपीसीओ के अनुसार औसत कीमतों तथा घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमतों, के न्यूनतर से की गई। उपर्युक्त के आधार पर, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा सहन किया गया क्षति मार्जिन निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:

विवरण	इकाई	जांच की अवधि
गैर क्षतिकारी कीमत रुपये/किग्रा	रुपये/किग्रा	***
डीपीसीओ के अनुसार औसत कीमत	रुपये/किग्रा	2790
उतराई कीमत	रुपये/किग्रा	***
क्षति मार्जिन	रुपये/किग्रा	***
क्षति मार्जिन (%)		***
रैंज		12-25

### छ.3 घरेलू उद्योग के आर्थिक पैरामीटर

43. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में यह अपेक्षा की जाती है कि क्षति का निर्धारण करने में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की उद्देश्यपरक जांच अंतर्गस्त होगी। ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में नियमावली में पुनः प्रावधान किया जाता है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संगत आर्थिक कारकों और देशनाकों का उद्देश्यपरक और पक्षपात रहित मूल्यांकन किया जाए जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है, इसमें बिक्री में वास्तविक एवं संभावित गिरावट, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर अर्जन अथवा क्षमता उपयोग; घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक; पाटन के मार्जिन का विस्तार, नकदी प्रभाव पर वास्तविक एवं संभावित ऋणात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, वेतन, वृद्धि, पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता शामिल होती है। घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन की

एक जांच यह व्यक्त करती है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति पैरामीटरों का वर्णन निम्नलिखित रूप में किया जाता है।

(क) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री

44. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा से संबंधित सूचना निम्नलिखित है:-

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)	जांच की अवधि-वार्षिकीकृत
क्षमता -घरेलू उद्योग	मी.टन	514	514	514	771	514
उत्पादन-घरेलू उद्योग	मी.टन	186	300	310	374	249.37
क्षमता उपयोग-घरेलू उद्योग	%	36.25%	58.41%	60.35%	48.52%	48.52
बिक्री-घरेलू	मी.टन	112	190	193	208	139

45. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान तथा जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री और वास्तविक क्षमता उपयोग में वर्ष 2009-10 तक ऊपर बढ़ने की प्रदर्शित हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में जांच की अवधि में 48.52% की गिरावट आई। इसी तरह, जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्रियों में भी भारी गिरावट हुई जबकि सम्बद्ध वस्तु की मांग में कोई परिवर्तन नोट नहीं किया गया। प्राधिकारी पुनः यह नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री में गिरावट आयी है वहीं उसी अवधि के दौरान संबद्ध क्षेत्र से आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है।

(ख) लाभ, नियोजित पूंजी पर अर्जन और नकद लाभ

46. घरेलू उद्योग के लाभ, निवेश पर अर्जन तथा नकदी प्रवाह की जांच निम्नलिखित रूप में की गई है:-

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)
बिक्री लागत	रुपये/किग्रा	***	***	***	***

प्रवृत्ति		100	96	90	102
बिक्री कीमत	रूपये/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	110	106	102
प्रति यूनिट लाभ/हानि	रूपये/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति		(100)	(18)	(0.43)	(104)
कर पूर्व लाभ	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति		(100)	(30.49)	(0.74)	(193.33)
ब्याज	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	216	83	72
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	लाख रुपये	***	***	***	***
नियोजित पूंजी	लाख रुपये	***	***	***	***
नियोजित पूंजी पर आवक	%	***	***	***	***
नगद लाभ	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति		(100)	91	(75)	(190)

47. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि:

- आधार वर्ष और जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत सामान्यतः घरेलू उद्योग की बिक्री लागत के अनुरूप ही रही है।
- घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में वर्ष 2009-10 तक सुधार हुआ परंतु जांच की अवधि में इसमें गिरावट आयी।
- यह नोट किया गया कि जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में यह गिरावट घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री की मात्रा में गिरावट के कारण आई है।

(क) रोजगार एवं वेतन:

48. घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर एवं वेतन की स्थिति निम्नलिखित है:

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)
वेतन	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	168	248	347
रोजगार	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	147	219	214

49. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग में रोजगार की संख्या और वेतन में वृद्धि दर्ज हुई है।

(घ) कर्मचारियों की उत्पादकता

(ड.) घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की उत्पादकता का विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:

कर्मचारियों की उत्पादकता	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)
प्रति कर्मचारी उत्पादन	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	109	36	50

51. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2009-10 के दौरान प्रतिकर्मचारी उत्पादकता में उक्त अवधि के दौरान तैनात किये गये कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि के कारण गिरावट आयी. परंतु वर्ष 2009-10 की तुलना में जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई।

(ड.) माल सूची

52. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर की जांच की जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

स्टाक (मात्रा)	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)
अथ	मी.टन	***	***	***	***



इति	मी.टन	***	***	***	***
औसत	मी.टन	***	***	***	***

53. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की माल सूची में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई।

(च) घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

54. संबद्ध क्षेत्र तथा अन्य देशों से आयात कीमतों, लागत ढांचे में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा वे अन्य कारक जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं, पर विचार करने से यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध क्षेत्र से आयातित सामान की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम है जिसके कारण भारतीय बाजार में भारी कीमत अधोरदन हुआ है। पुनः यह नोट किया जाता है कि अन्य देशों से संबद्ध वस्तु के आयात बहुत अधिक कीमतों पर हुए हैं। इस उत्पाद का कोई अर्थक्षम प्रतिस्थानक नहीं है। यह भी नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में भी भारी वृद्धि प्रदर्शित हुई है और घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाला यह कारक नहीं हो सकता है। अतः, घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित करने वाला प्रधान कारक संबद्ध क्षेत्र से संबद्ध वस्तु की उतराई कीमत तथा कच्चे माल की लागत है।

(छ) पूंजी उगाहने की क्षमता

55. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करने वाली इकाईयां बहु-उत्पाद कंपनियां हैं। यह नोट किया गया कि दोनों कंपनियों के समग्र प्रचालन में संबद्ध वस्तु के उत्पादन और बिक्री का हिस्सा बहुत अधिक है। अतः, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इन दोनों कंपनियों का, संबद्ध वस्तु से संबंधित प्रचालन के बारे में निष्पादन एवं लाभ प्रदायकता में कोई परिवर्तन इन कंपनियों की पूंजी उगाहने की क्षमता पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालेगा।

(छ) वृद्धि

56. घरेलू उद्योग की वृद्धि के संबंध में प्राधिकारी निम्नलिखित नोट करते हैं:

वृद्धि (वर्ष दर वर्ष)	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच की अवधि अप्रैल 2010 से सितम्बर, 2011)
-----------------------	------	---------	---------	---------	--

उत्पादन	%	-	***	***	***
बिक्री मात्रा	%	-	***	***	***
प्रति इकाई लाभ/हानि	%	-	***	***	***
निवेश पर अर्जन	%	-	***	***	***
बाजार हिस्सा	%	-	***	***	***

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री मात्रा, लाभ तथा निवेश पर अर्जन में क्षति अवधि तथा जांच की अवधि में गिरावट आयी है।

छ.4. भेषज कीमत नियंत्रण आदेश (डीपीसीओ), 1995 के अनुरूप कीमत

58. प्राधिकारी नोट करते हैं कि केन्द्रीय सरकार ने दिनांक 23.3.2008 की अधिसूचना सं. सां.आ. 539(अ) के तहत सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेड की अधिकतम बिक्री कीमत 2758 रुपये प्रति किग्रा निर्धारित की गई है। उसके पश्चात केन्द्रीय सरकार ने दिनांक 1.7.2011 की अधिसूचना सं. सां.आ. 150(अ) के तहत सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेड की अधिकतम बिक्री कीमत में दिनांक 1.7.2011 को संशोधन करके 2951/-रुपये प्रति किग्रा कर दी। अतः जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की औसत डीपीसीओ कीमत 2790 रुपये प्रति किग्रा थी। चूंकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति का आंशिक कारण सरकार द्वारा अधिसूचित अधिकतम बिक्री कीमत भी है। अतः प्राधिकारी ने उस क्षति का आकलन करने के प्रयोजन के लिए, जिसे पाटित आयातों को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है, सरकार द्वारा यथा अधिसूचित औसत डीपीसीओ कीमत पर विचार किया है।

विवरण	इकाई	मैसर्स डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स नीदरलैंड्स बी.वी	अन्य उत्पादक/निर्यातक
डीपीसीओ कीमत	रुपये/किग्रा	2790	2790
उत्तराई कीमत	रुपये/किग्रा	***	***
क्षति मार्जिन	रुपये/किग्रा	***	***
क्षति मार्जिन	%	***	***
रैंज %		12-25	14-27

**छ.5 अन्य ज्ञात कारक तथा कारणात्मक संबंध**

59. पाटनरोधी नियमावली के अनुसार, निर्दिष्ट प्राधिकारी को, अन्य बातों के साथ-साथ, पाटित आयातों के अलावा उन सभी ज्ञात कारकों की जांच करना अपेक्षित होता है जो उस समय पर घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहे हों जिससे कि इन अन्य कारकों द्वारा कारित क्षति के लिए पाटित आयातों को उत्तरदायी न ठहराया जा सके। इस संबंध में जो कारक प्रासंगिक हैं उनमें, अन्य बातों के साथ-साथ, उन आयातों की मात्रा एवं कीमत जिनकी बिक्री पाटित कीमतों पर नहीं की गई, मांग में संकुचन अथवा खपत की प्रणाली में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास, निर्यात निष्पादन तथा घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल है। प्राधिकारी ने यह जांच की कि क्या पाटन रोधी नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य कारक घरेलू उद्योग को क्षति कारित करने में अपना योगदान दे सकते हैं।

60. कारणात्मक संबंधों की जांच निम्नवत की गई है:

(क) तृतीय देशों से आयात तथा अन्य ज्ञात कारक

61. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध क्षेत्र के अलावा अन्य देशों से आयात की मात्रा नगण्य रही है।

(ख) मांग में संकुचन और / या खपत की प्रणाली में परिवर्तन।

62. क्षति अवधि में मांग में वृद्धि हुई है और जांच की अवधि के दौरान इसमें थोड़ी सी गिरावट आयी है। अतः सम्बद्ध वस्तु की मांग में संकुचन अथवा खपत की प्रणाली में परिवर्तन को घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

(ग) व्यापार प्रतिबंधक प्रक्रिया तथा विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा ।

63. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु के लिए केवल एक ही बाजार थी जहां संबद्ध क्षेत्र से पाटित आयातों की घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तु के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा हुई। यह भी नोट किया जाता है कि आयातित सम्बद्ध वस्तु तथा घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु दोनों समान वस्तुएं हैं तथा दोनों का प्रयोग समान अनुप्रयोगों/अन्तिम उपयोग के लिए किया जाता है। व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाओं तथा विदेशी उत्पादकों एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा का ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति कारित हो रही है।

(घ) प्रौद्योगिकी में विकास

64. प्रौद्योगिकी में विकास का कोई आरोप नहीं है और अब तक की गई जांच से न ही यह स्पष्ट हुआ है कि घरेलू उद्योग को संभावित क्षति प्रौद्योगिकी में विकास के द्वारा की जा सकती है।

## (ड.) निर्यात निष्पादन

65. प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता कंपनियों के निर्यात की मात्रा बहुत अधिक नहीं है। अतः क्षति अवधि तथा जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को होने वाले नुकसान के लिए घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

## (घ) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

66. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादकता में कोई विदेश परिवर्तन नहीं आया है।

## छ.6 कारणात्मक संबंध

67. घरेलू उद्योग को क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में निर्यातकों/आयातकों तथा अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए हैं:-

(i) याचिकाकर्ता द्वारा बेची गई वस्तु की कीमतों तथा आयातों के बीच कोई संबंध मौजूद नहीं है। कारणात्मक संबंध के अभाव में, यह अनुरोध किया जाता है कि यह जांच समाप्त कर दी जानी चाहिए।

(ii) वह कीमतें जिन पर याचिकाकर्ता द्वारा संबद्ध वस्तु की बिक्री की जा सकती है, भारत सरकार द्वारा डीपीसीओ 1995 के जरिए नियंत्रित होती हैं। याचिकाकर्ता को क्षति का प्रथम कारण यह तथ्य है कि सम्बद्ध वस्तु की बिक्री कीमतों को सरकार द्वारा डीपीसीओ के जरिए विनियमित किया जाता है। प्राधिकारी को इस तथ्य को ध्यान में रखकर कि सम्बद्ध वस्तु की बिक्री कीमतों पर डीपीसीओ द्वारा नियंत्रण किया जाता है, यह जांच करनी चाहिए कि क्या याचिकाकर्ता को आयातित वस्तु से किसी तरह की प्रतिस्पर्धा के अभाव में लाभ अर्जित हुआ होगा या नहीं।

(iii) याचिकाकर्ता को वर्ष 2009-10 के दौरान, अर्थात् जांच की अवधि से ठीक पहले के वर्ष, से क्षति होना शुरू हो गया था। तथापि, इस वर्ष के दौरान, डीएसएम इंडिया ने भारतीय बाजार में आयातित वस्तुओं की बिक्री डीपीसीओ कीमतों पर की है। जब वस्तु की बिक्री डीपीसीओ द्वारा निर्धारित कीमतों पर की गई तो घरेलू उद्योग को कथित पाटित आयातों के कारण कोई नुकसान नहीं होना चाहिए था।

(iv) घरेलू बाजार में एक बहुत बड़ा हिस्सा अन्य घरेलू उत्पादक अरबिन्दो फार्मा लिमिटेड द्वारा धारित किया जाता है। याचिकाकर्ता तथा अन्य घरेलू उत्पादक के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा के कारण याचिकाकर्ता को अपनी बिक्री कीमत कम करनी पड़ी और इस कारण उसे क्षति हुई।

68. घरेलू उद्योग को क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए हैं:-

- (i) सम्बद्ध क्षेत्र से किए गए आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का एक बहुत बड़ी सीमा तक अधोरदन कर रहे हैं। आयात कीमत घरेलू कीमत का अधोरदन कर रही है।
- (ii) यद्यपि उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही थी, वही बिक्री कीमत में गिरावट आ रही थी। इसके अतिरिक्त, पिछले कुछ वर्षों के उत्पादन लागत में कुछ गिरावट होने के बावजूद कीमतों में गिरावट, लागत में हुई गिरावट की तुलना में बहुत अधिक थी। समग्र रूप से, आयातों से घरेलू कीमतों का निग्रहण एवं अवमंदन हो रहा है।
- (iii) लाभ, निवेश पर अर्जन तथा नकद लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आ रही थी और जांच की अवधि के दौरान यह नकारात्मक हो गया था।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

69. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सूचीबद्ध अन्य ज्ञात तथ्य यह नहीं दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति इन कारकों द्वारा कारित की गई है। तथापि, निम्नलिखित पैरामीटर यह दर्शाते हैं कि पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाई जा रही है।

70. सम्बद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में संपूर्ण स्तर पर भारी वृद्धि हुई थी। सम्बद्ध वस्तु के कुल आयातों में सम्बद्ध क्षेत्र से पाटित आयातों का बाजार हिस्सा पर्याप्त रूप से बहुत अधिक रहा है। यह भी नोट किया जाता है कि पाटित आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे थे। यह भी निश्चित किया जाता है कि पाटित आयातों का कीमत अवमंदन तथा कीमत अधोविक्रयण के रूप में भारी निर्यात कीमत प्रभाव हुआ था। इसके अतिरिक्त सम्बद्ध क्षेत्र से प्रतिवादी उत्पादकों एवं निर्यातकों से पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है तथा उसे महत्वपूर्ण माना जाता है। यह नोट किया जाता है कि सम्बद्ध क्षेत्र से सम्बद्ध वस्तु के पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री स्तर को विपरीत ढंग से प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, यह भी नोट किया जाता है कि पाटित आयातों का कीमत अवमंदन तथा कीमत निग्रहण के रूप में भारी विपरीत कीमत प्रभाव हुआ है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभ तथा निवेश पर अर्जन में भारी गिरावट आई है। इसलिए, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और यह क्षति सम्बद्ध क्षेत्र से पाटित आयातों की कीमत एवं मात्रा प्रभाव के कारण बहुत अधिक हुई है। अतः, प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति सम्बद्ध क्षेत्र से पाटित आयातों के कारण हुई है।

71. प्राधिकारी ने, घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया है। घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत की तुलना, क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए, प्रतिवादी उत्पादकों तथा निर्यातकों के संबद्ध आयात के उतराई मूल्य से की गई है। क्षतिमार्जिन का निर्धारण निम्नवत किया गया है।

#### क्षति मार्जिन

यूनिट: अम.डा. प्रति क्रिया.

उत्पादक	गैर क्षतिकारी कीमत	उतराई कीमत	क्षति मार्जिन (आईएम )	क्षति मार्जिन%	क्षति मार्जिन रेंज %
मै. डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स नीदरलैण्ड्स बीवी नीदरलैण्ड्स	***	***	***	***	12-25
अन्य उत्पादक/निर्यातक	***	***	***	***	14-27

72. यथा निर्धारित पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन के स्तर को अति महत्वपूर्ण माना गया है।

ज. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

73. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार संव्यवहारों से घरेलू उद्योग के पहुंचाई जा रही क्षति का उपशमन करना है, जिससे कि भारतीय बाजार में मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनर्स्थापित की जा सके, जिससे देश का हित सुरक्षित किया जा सके। पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने का आशय सम्बद्ध देश/क्षेत्र से हो रहे आयातों पर किसी भी तरह का प्रतिबंध लगाना नहीं है और इस अधिरोपण के कारण उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

74. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से सम्बद्ध वस्तु का प्रयोग करके विनिर्मित किए जा रहे उत्पाद के कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है और इसके परिणामस्वरूप इस उत्पाद की संगत प्रतिस्पर्धात्मकता पर भी कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी शुल्क, खासकर तब जब पाटनरोधी शुल्क की वसूली एक ऐसी राशि तक प्रतिबंधित हो जो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निराकरण करने के लिए जरूरी हो तो, से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा किसी भी रूप में कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में आई गिरावट रुकेगी तथा इससे उपभोक्ताओं को सम्बद्ध वस्तु की व्यापक उपलब्धता का विकल्प बना रहेगा।

झ. विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण

झ.1 विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण

75. विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं:

- i. इस बात को पुनः दोहराया गया कि कई अनुस्मारक दिए जाने के बावजूद प्रपत्र-IV-क की अगोपनीय प्रति कभी भी उपलब्ध नहीं कराई गई। डीजीएडी की ओर से की गई यह कार्रवाई पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(7) और डब्ल्यू टी ए: ए डी ए के अनुच्छेद 6.1.2 के विपरीत है।
- ii. मालसूची, वृद्धि, मूल्यहास और अचल परिसम्पत्तियों सहित कई क्षति पैरामीटरों के बारे में, जिनका प्रकटन किया जाना चाहिए, घरेलू उद्योग द्वारा कुछ ज्यादा ही गोपनीयता का दावा किया गया है।
- iii. नियम-6 में प्रावधान है कि प्रत्येक मामले में उसके गुणावगुण आधार पर अंतरों के लिए उचित अनुमति दी जानी चाहिए जो व्यापार के स्तर सहित कीमत तुलनीयता को प्रभावित करते हों। डीजीएडी मौजूदा नियमों का अनुसरण करने के लिए बाध्य है और पिछली परम्परा के बहाने उनकी उपेक्षा करने का निर्णय नहीं कर सकती है। डीएसएम ने व्यापार समायोजन के स्तर के बारे में पर्याप्त साक्ष्य एवं औचित्य प्रदान किया है और इसलिए वर्तमान मामलों में व्यापार के स्तर का समायोजन करने और पाटन मार्जिन की पुनर्संरचना करने की अनुमति प्रदान करने के लिए डीजीएडी से अनुरोध करता है।
- iv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 15(1) में दी गई शर्तों के अनुसार, डी एस एम नीदरलैंड्स और डीएसएम स्पेन में कीमत वचनबद्धता के लिए प्रस्ताव किया है। इस संबंधमें डीजीएडी से न तो कोई पत्राचार प्राप्त हुआ है और न ही प्रकटन विवरण में इस तथ्य पर विचार किया गया है। उपर्युक्त के मद्देनजर डीएसएम कीमत वचनबद्धता के लिए अपने अनुरोध को पुनः दोहराता है।
- v. वर्ष 2009-10 के दौरान, सम्बद्ध वस्तु का लदान मूल्य वर्ष 2008-09 के लदान मूल्य की तुलना में कम था। इस तथ्य के बावजूद वर्ष 2009-10 के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में तेजी से सुधार हुआ। यह स्पष्टतः दर्शाता है कि आयातों एवं घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मक संबंध नहीं है।
- vi. घरेलू प्रतिस्पर्धा और सरकारी नियंत्रण के कारण याचिकाकर्ता को होने वाली क्षति के लिए यह नहीं कहा जा सकता है कि वह क्षति पाटन के कारण हुई है। डीजीएडी ने यह जांच नहीं की कि इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि सम्बद्ध वस्तु की बिक्री कीमतों पर डीपीसीओ का नियंत्रण है फिर भी क्या आयातित वस्तु से प्रतिस्पर्धा के अभाव में याचिकाकर्ता ने लाभ अर्जित किया होगा।
- vii. यह क्षति आत्म प्रवृत्त है क्योंकि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आने के बावजूद कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई।

- viii. प्रकटन विवरण में प्राधिकारी ने पाया कि तथ्यों से प्रथम दृष्टया, संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण कीमत निग्रहण अथवा अवमंदन के किसी साक्ष्य का सुझाव नहीं मिलता है। तथापि, प्रकटन विवरण में ही अन्य स्थानों पर डीजीएडी ने इसके विपरीत प्रेक्षण किए हैं। डीजीएडी से अनुरोध किया जाता है कि वह इसे स्पष्ट करें तथा एक संशोधित प्रकटन विवरण प्रदान करें जिससे कि डीएसएम अपनी टिप्पणियां प्रदान कर सके।
- ix. डीजीएडी ने विचार किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध क्षेत्र से आयातित सम्बद्ध वस्तु, अन्य बातों के साथ-साथ, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रायोगिकी तथा वितरण एवं विपणन के रूप में तुलनीय हैं। डी एस एम यह प्रस्तुत करता है कि घरेलू उद्योग की तुलना में भिन्न विनिर्माण प्रक्रिया, प्रायोगिकी, वितरण एवं विपणन है। डीएसएम की एक पेटेन्ट प्रक्रिया है, जिसका अन्य कोई प्रयोग नहीं कर सकता है। घरेलू उद्योग प्रत्यक्ष तथा अधिकांशतः एफडीएफ में बिक्री करता है जबकि प्रति प्रावादी प्रत्यर्थी भारत में पुनर्बिक्रीकर्ता (डीएसएम इंडिया) के जरिए बिक्री करते हैं। डी एस एम इस उत्पाद को प्योरीडाक्स के रूप में ब्रांड करता है क्योंकि यह उत्पाद आवेदनकर्ता तथा अन्य प्रतिस्पर्धियों के उत्पाद की तुलना में अधिक शुद्ध, स्वच्छ एवं हरित उत्पाद है।
- x. घरेलू उत्पादक की गैर क्षतिकारी कीमत तथा आयात उत्पादों की कीमत की तुलना समान स्तर पर की गई जिसे व्यापार की भाषा में "व्यापार के समान स्तर" के रूप में माना जाता है। यदि गैर क्षतिकारी कीमत वह अंतिम कीमत है जिसपर ग्राहक या उपन्तिम डीलर उत्पाद को फैक्टरी बाह्य पर प्राप्त करते हैं तो तुलनीय निर्यात कीमत का निर्धारण भी अनिवार्यतः केवल उसी स्तर पर किया जाना चाहिए। निर्यातित वस्तुओं के लिए व्यापार के उसी स्तर पर कीमतों की तुलना करने के लिए, उन कीमतों पर विचार किया जाना चाहिए जिन पर वे वस्तुएं अंतिम ग्राहकों को उपलब्ध हैं।
- xi. डी एस एम नीदरलैंड्स सम्बद्ध वस्तु का निर्यात भारत में केवल अपने संबंधित आयातक अर्थात् डी एस एम इंडिया को करता है जो इस पर भारत में बिक्री एवं प्रशासनिक व्यय करने के पश्चात् भारत में उसकी पुनर्बिक्री करता है। यह व्यय, अन्य बातों के साथ-साथ, उत्पाद का विपणन करने के लिए होते हैं और इसलिए यह व्यय तब किए जाते हैं जब वस्तुएं अंतिम ग्राहक को बिक्री के लिए तैयार होती हैं। अतः वह कीमत जिसपर अंतिम ग्राहक भारत में आयातित वस्तु प्राप्त कर सकता है, वह कीमत होती है जिस पर भारत इन आयातित वस्तुओं की पुनर्बिक्री करता है। चूंकि आयातक और निर्यातक एक दूसरे से संबद्ध हैं, इसलिए डीजीएडी ने इस मामले में इस तथ्य पर पहले भी विचार किया है और पुनः यह विचार किया जाना चाहिए कि यह निर्यातक और आयातक एक एकल आर्थिक निकाय हैं और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए संबंधित आयातक की पुनर्बिक्री कीमतों के आधार पर निर्यात कीमत का परिकलन करता है।
- xii. चूंकि सम्बद्ध वस्तु की कीमतें डीपीसीओ द्वारा नियंत्रित की जाती हैं, इसलिए आयातक किसी भी रूप में इस उत्पाद की बिक्री डीपीसीओ से उच्चतर कीमतों पर नहीं कर सकता है। इन परिस्थितियों में रुपये के लगातार



कमजोर होने से शुल्क की निर्धारित दर, आयात कीमत तथा पाटनरोधी शुल्क डीपीसीओ कीमतों से अधिक हो जाएगा। इसके परिणामस्वरूप, भारतीय रुपये के रूप में संदर्भ कीमत आधारित शुल्क उपयुक्त होगा।

xiii. डीजीएडी से, पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन तालिका में मैसर्स डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स स्पेन एस.ए. स्पेन का नाम जोड़ने का अनुरोध किया गया है। इसके अतिरिक्त, यदि प्राधिकारी प्रतिवादियों द्वारा किए गए निर्यात पर पाटन रोधी शुल्क उद्ग्रहण करने का निश्चय करते हैं तो मैसर्स डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिकल्स स्पेन, एस.ए.स्पेन का नाम शुल्क तालिका में जोड़ा जा सकता है।

## झ.2 घरेलू उद्योग द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण

76. घरेलू उद्योग द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण संक्षेप में निम्नलिखित है:-

i) घरेलू उद्योग ने सभी आवश्यक विवरण पहले ही प्रस्तुत कर दिया है और इस कारण उसे कोई अतिरिक्त टिप्पणियां नहीं करनी हैं। सम्बद्ध वस्तु का पाटन भारी पैमाने पर जारी रहा जिसके कारण घरेलू उद्योग को हर गुजरते दिन के साथ-साथ क्षति हुई।

## झ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

77. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अधिकांश प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण बार-बार दोहराए गए हैं और उनका प्रकटन विवरण में तथा इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में उचित शीर्षकों के अंतर्गत समाधान पहले ही कर दिया गया है। इस दावे के संबंध में कि प्रपत्र-IV-क की अगोपनीय प्रति कभी भी उपलब्ध नहीं कराई गई, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्रपत्र-IV-क की अगोपनीय प्रति प्राधिकारी द्वारा हितबद्ध पक्षकारों के अवलोकनार्थ सार्वजनिक फाइल में रख दी गई थी। कीमत वचनबद्धता के लिए डीएसएम नीदरलैंड्स और डीएसएम स्पेन के दावे के संबंध में प्राधिकारी ने कीमत वचनबद्धता की मानिट्रिंग में आने वाली व्यावहारिक दिक्कतों के मद्देनजर कीमत वचनबद्धता को स्वीकार नहीं किया है। डीएसएम स्पेन को शामिल किए जाने के संबंध में प्राधिकारी ने नोट किया कि डीएसएम स्पेन सम्बद्ध वस्तु का विनिर्माण करने की गतिविधियों को आंशिक रूप से प्रसंस्कृत करने में ही लगा हुआ है और उसे इसके लिए टारिफ शुल्क प्राप्त होता है। डीएसएम स्पेन न तो प्रमुख विनिर्माता है और न ही निर्यात के संबंध में कोई दस्तावेज डीएसएम स्पेन के नाम पर उगाहा गया है। इसलिए, प्राधिकारी पाटन मार्जिन तालिका, क्षति मार्जिन तालिका और शुल्क तालिका में डीएसएम स्पेन का नाम शामिल किए जाने पर सहमत नहीं हैं। इस दावे के संबंध में कि शुल्क का निर्धारण संदर्भ कीमत के आधार पर किया जाना चाहिए, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा शुल्क की प्रकृति का निर्धारण अलग-अलग मामले के गुणावगुण, प्रकृति एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया जाता है और वर्तमान मामले में निश्चित शुल्क की संस्तुति की है। व्यापार के स्तर के कारण समायोजन के लिए निर्यातक के दावे के सम्बंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बाजार में अधिकांश बिक्रियां पुनर्बिक्रीकर्ता को की गई हैं। अतः, प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए घरेलू बिक्रियों के भारित औसत पर विचार किया है।

## ज. निष्कर्ष

78. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों तथा उनके उठाए गए मुद्दों की जांच करने तथा रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि विचाराधीन उत्पाद बल्क इग सीफाइक्सिल मोनेहाइड्रेट का यूरोपियन यूनियन से भारत को निर्यात इससे जुड़े सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया जिसके परिणामस्वरूप उत्पाद का पाटन हुआ। घरेलू उद्योग को सम्बद्ध वस्तु के बारे में वास्तविक क्षति हुई। यह वास्तविक क्षति यूरोपियन यूनियन से पाटित आयातों के कारण कारित की जा रही है।

## सिफारिशें

79. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच प्रारंभ की गई तथा इसे सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया तथा पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक जानकारी प्रदान कराने के लिए निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया। पाटन, क्षति तथा उनके कारणात्मक संबंधों के बारे में पाटनरोधी नियमावली के अनुसार जांच प्रारंभ करके एवं आयोजित करके तथा इन पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को पहुंचाई जाने वाली वास्तविक क्षति तथा सकारात्मक पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के पश्चात प्राधिकारी का विचार है कि पाटन तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाली क्षति को दूर करने के लिए निर्णायक पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करना अपेक्षित है। अतः, प्राधिकारी सम्बद्ध क्षेत्र से सम्बद्ध वस्तु के आयातों पर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क का निम्नलिखित स्वरूप और ढंग से अधिरोपण करने की संस्तुति करना आवश्यक समझते हैं।

80. प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए गए न्यूनतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन के न्यूनतर के बराबर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति दूर की जा सके। तदनुसार, प्राधिकारी यूरोपियन यूनियन के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के सभी आयातों पर, केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका में निर्धारित राशि के अनुसार निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपण करने की सिफारिश करते हैं।

## शुल्क तालिका

क्र. सं.	उप-शीर्षक	वस्तु विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	मापन की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	29420011	बल्क इग सीफाइक्सिल मोनेहाइड्रेट	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	मैसर्स डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटि	मैसर्स डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटिक	7.88	प्रति किया.	अम.डा.

					कल्स, नीदरलैंड्स बी.वी. नीदरलैंड्स	ल्स, नीदरलैंड्स बी.वी. नीदरलैंड्स			
2	29420011	बल्क इग सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेट	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	मैसर्स डीएसएम सिनोकेम फार्मास्युटि कल्स, नीदरलैंड्स बी.वी. नीदरलैंड्स	मै. डीएसएम एण्टी इन्फेक्टिब्ज इजिप्ट एसएई	7.88	प्रति किग्रा.	अम.डा.
3	29420011	बल्क इग सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेट	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	क्रम सं. 1 और 2 के अतिरिक्त अन्य कोई संयोजन		9.03	प्रति किग्रा.	अम.डा.
4	29420011	बल्क इग सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेट	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन को छोड़कर अन्य कोई	कोई	कोई	9.03	प्रति किग्रा.	अम.डा.
5	29420011	बल्क इग सीफाड्राक्सिल मोनोहाइड्रेट	यूरोपियन यूनियन को छोड़कर अन्य कोई	यूरोपियन यूनियन	कोई	कोई	9.03	प्रति किग्रा.	अम.डा.

81. इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए आयातों का इतराई मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथा निर्धारित, आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क को छोड़कर अन्य सभी शुल्क शामिल होंगे।

82. केन्द्रीय सरकार के इस आदेश के विरुद्ध सीमाशुल्क उत्पाद कर और सेवाकर अपीलीय अधिकरण के समक्ष सीमा शुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार अपील की जा सकती है।

जे. एस. दीपक, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY****(Department of Commerce)****(Directorate General of Anti-Dumping and Allied Duties)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 19th July, 2013

**(Final Findings)**

**Subject : Final Findings in the anti-dumping investigation concerning imports of Bulk Drug Cefadroxil Monohydrate originating in or exported from the European Union -reg**

**No.14/8/2011-DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time, and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995 thereof:

**A. BACKGROUND OF THE CASE**

1. Whereas, having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time, (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Rules or the AD Rules), the Designated Authority received a written application from M/s Lupin Ltd., Mumbai, on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Cefadroxil Monohydrate originating in or exported from the European Union. M/s Aurbindo Pharma Ltd, Hyderabad, had supported the application.

**B. PROCEDURE**

2. The procedure described below has been followed in this investigation:

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) under the above Rules, after having received the written application from M/s Lupin Ltd., Mumbai, (hereinafter referred to as the applicant) on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Cefadroxil Monohydrate (hereinafter referred to as the subject goods or the product) originating in or exported from the European Union (hereinafter referred to as the EU or the subject territory) and on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant justifying the initiation of the investigation, decided to initiate the investigation against imports of the subject goods from the subject territory.

- (ii) The Authority notified to the Delegation of European Union to India, New Delhi, as also the Embassy of Spain in India (as the applicant, in its application, had named a producer/exporter from Spain alleged to be dumping the subject goods) about the receipt of the application of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the AD Rules.
- (iii) The Authority issued a public notice No 14/8/2011-DGAD dated 22nd February 2012, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods from the subject territory.
- (iv) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available in the application) and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the Initiation Notification in accordance with the Rule 6(2) of the AD Rules.
- (v) The Authority also forwarded a copy of the said public notice to all the known importers/users of the subject goods in India and advised them to make their views in writing within forty days from the date of the Initiation Notification.
- (vi) The Authority provided a copy of the non-confidential version of application to the known exporter, the Delegation of the European Union to India and the Embassy of Spain in India in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules. A copy of the Application was also provided to other interested parties, wherever requested.
- (vii) The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporter in the subject territory (whose details were made available in the application) in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
  - i. M/s DSM Anti-Infectives Chemferm S.A. Spain (producer)
- (viii) In response to the initiation notification, the following exporters / producers responded:
  - i. M/s DSM Anti-Infectives Chemferm S.A. Spain (producer), (now called DSM Sinochem Pharmaceutical Spain SA),
  - ii. M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V, Netherlands (producer and exporter), and
  - iii. M/s DSM Anti-Infectives Egypt SAE (trader and exporter)
- (ix) Questionnaires were sent to the following known importers/users of subject goods in India (whose details were made available in the application) calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
  - i. M/s DSM Anti Infectives India Ltd., Gurgaon (now called DSM Sinochem Pharmaceuticals India Pvt Limited, Gurgaon)
  - ii. M/s Micro Labs Ltd., Bangalore
  - iii. M/s Aristo Pharmaceuticals Ltd., Mumbai
  - iv. M/s Ajanta Pharma Ltd., Mumbai
  - v. M/s FDC Ltd., Mumbai
  - vi. M/s Indian Drug Manufacturers' Assn., (IDMA), Mumbai

- vii. Organisation of Pharmaceutical Producers of India (OPPI), Mumbai
  - viii. Bulk Drug Manufacturers' Assn. (BDMA), Hyderabad
  - ix. Orchid Chemicals & Pharmaceuticals Ltd., Chennai
- (x) In response to the initiation notification, the following importers responded:
- i. DSM Sinochem Pharmaceuticals India Pvt Limited, Gurgaon (formerly known as M/s DSM Anti Infectives India Ltd. (importer and trader)
  - ii. M/s Micro Labs Ltd., Bangalore (importer and trader)
- (xi) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- (xii) Information provided by interested parties on confidential basis was examined by the Authority with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.
- (xiii) Further information was sought from the applicant and other interested parties to the extent deemed necessary.
- (xiv) The non-injurious price based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of laid down guidelines under Annexure III of the AD Rules has been worked out so as to ascertain whether anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- (xv) Investigation was carried out for the period of investigation (POI) starting from 1<sup>st</sup> April, 2010 to 30<sup>th</sup> September, 2011. The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the financial years 2007-08, 2008-09, 2009-10 and the POI.
- (xvi) The Authority held an Oral Hearing on 14th December, 2012 to hear the interested parties orally. The interested parties present at the time of hearing were advised to file written submissions of the views expressed orally and also given an opportunity to file rejoinder to the views expressed by the other interested parties. The written submissions and rejoinders received from the interested parties have been considered to the extent considered relevant.
- (xvii) The submissions made by the interested parties considered relevant by the Authority have been analysed and addressed in this Final Findings Notification.

- (xviii) The original date to complete the investigation was up to 22nd February, 2013. However, at the request of the Authority, this date was extended by the Ministry of Finance up to 22nd July, 2013.
- (xix) A Disclosure Statement containing the essential facts in this investigation which would have formed the basis of the Final Findings was issued to the interested parties on 24.06.2013. The post Disclosure Statement submissions received from the interested parties have been considered, to the extent found relevant, in this Final Findings Notification.
- (xx) \*\*\* in this Final Findings Notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- (xxi) The exchange rate adopted for the POI is 1 US \$ =Rs 45.87.

### **C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE**

#### **Views of the Domestic Industry**

3. The production under consideration (PUC) in the present investigation is bulk drug Cefadroxil Monohydrate of all forms including USP and other Pharmacopeial grades, and salts of the drug, if any. Cefadroxil Monohydrate is a white to yellowish-white crystalline powder. It is soluble in water and is acid-stable. Bulk drug Cefadroxil Monohydrate is an active pharmaceutical ingredient used for the manufacturing of pharmaceutical formulations. This bulk drug is used to manufacture formulations, which are consumed by the patients on the prescription of the doctors. Doses of 500 mg and 1000 mg are available as single dose or double dose per day. It is also available in the form of syrup. The drug is well absorbed orally. Bulk drug Cefadroxil Monohydrate falls under the group Oral Cephalosporins. Cephalosporins, in general, are broad spectrum bactericidal agents which inhibit bacterial cell wall synthesis. It is also used for urinary tract infections and skin infections. Bulk drug Cefadroxil Monohydrate is classified under Chapter Heading 29, Sub-heading No. 29420011 under the Customs Tariff Act, 1975. However, the customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

#### **Views of exporters, importers, consumers, users and other interested parties**

4. None of the exporters, importers, consumers and other interested parties has raised any substantive issue regarding the product under consideration its scope.

#### **Examination by the Authority**

5. The Authority has noted that the product under consideration is defined as Bulk drug Cefadroxil Monohydrate. Cefadroxil Monohydrate is a white to yellowish-white crystalline powder. It is soluble in water and is acid-stable. Bulk drug Cefadroxil Monohydrate is an active

pharmaceutical ingredient used for the manufacturing of pharmaceutical formulations. This bulk drug is used to manufacture formulations, which are consumed by the patients on the prescription of the doctors. Doses of 500 mg and 1000 mg are available as single dose or double dose per day. It is also available in the form of syrup. The drug is well absorbed orally. Bulk drug Cefadroxil Monohydrate falls under the group Oral Cephalosporins. Cephalosporins, in general, are broad spectrum bactericidal agents which inhibit bacterial cell wall synthesis. It is also used for urinary tract infections and skin infections. Bulk drug Cefadroxil Monohydrate is classified under Chapter Heading 29, Sub-heading No. 29420011 under the Customs Tariff Act, 1975. However, the customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

#### Like Article

6. Rule 2(d) of the AD Rules defines like article as follows:

*"an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has the characteristics closely resembling those of the articles under investigation".*

7. The applicant has claimed that the subject goods produced by the domestic industry are identical to the product under consideration being imported into India from the subject territory. The applicant claimed that there is no known difference in applicant's product and the product under consideration exported from the subject territory and the two are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The subject goods produced by the applicant and those exported from the subject territory to India are technically and commercially substitutable. None of the responding interested parties has disputed the claim of the applicant in this regard.

8. The Authority has examined the matter and notes that there is no known difference in subject goods produced by the domestic industry and that imported into India from the subject territory. The subject goods produced by the domestic industry and that imported from subject territory are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. None of the opposing interested parties has raised any objection in this regard. In view of the same, the Authority treats the subject goods produced by the petitioner companies as domestic like article to the product under consideration imported from the subject territory in accordance with the anti dumping Rules.

#### **D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING**

9. Rule 2 (b) of the AD Rules defines the domestic industry as under:



*“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”*

**Submissions by exporters/importers/users and other opposing interested parties**

10. The exporters/importers/users and other opposing interested parties have made the following submissions:

(i) Rule 2(b) of the AD Rules defines the term ‘Domestic Industry’ to mean domestic producers of the subject goods as ‘a whole’ or a ‘major proportion’ of the producers. The present petition has been filed by M/s Lupin Limited and supported by M/s Aurobindo Pharma Limited. The claim of the petitioner that there are only two producers, i.e., M/s Lupin Limited and M/s Aurobindo Pharma Limited, is factually incorrect. Orchid Limited and Surya Pharmaceuticals Limited are also engaged in the production of the subject goods. Further, Aurobindo Pharma Limited has merely filed a support letter but has not provided its injury information. Therefore, Aurobindo Pharma Limited can neither be regarded as a supporter nor be regarded as the domestic industry within the meaning of the statute. Reliance in this regard is placed on the finding of the Authority in the investigation concerning import of ‘Seamless tubes, pipes, hollow profiles of iron alloy steel other than cast iron’ from China PR, wherein the investigation was terminated as the supporter did not provide its costing and financial information. Standing of the petitioner should be determined after taking into account the production of all the domestic producers.

(ii) M/s Lupin Limited, the petitioner, has all along been holding only a minor proportion of the total domestic production in the country. It is Aurobindo Pharma which has been holding a major proportion in the domestic production. The information for the POI has, however, not been made available to the interested parties. Taking a cue from the production data for the earlier years, it is clearly evident that the petitioner does not hold a major proportion of the domestic production and, therefore, does not constitute domestic industry within the meaning of the statute.

(iii) The petitioner has not provided the breakup of production by individual producers for the POI proposed by the Authority in the updated petition. M/s Lupin Ltd, the petitioner, has all along been holding only a minor proportion of the total domestic production in the country. Petitioner alone cannot be regarded as domestic industry. Even in the international arena, the phrase ‘major proportion’ means all domestic producers except in cases where the market is unorganized.

(iv) Even if the production of the petitioner constitutes more than 50% of the total domestic production during the POI, the Authority should make an objective analysis of the situation for the last four years wherein the major proportion of production has been held by the other

domestic producer and hold that the petitioner does not constitute 'domestic industry' within the meaning of the statute.

(v) The claim of the petitioner that the other producers of the subject goods like Unimark, Aurobindo etc. have shut down their operation because of dumping from the EU is factually incorrect. In fact, M/s Unimark Pharma (India) Ltd could not continue producing because the goods were being manufactured under sub-optimal environment using production lines not meant for production of the subject goods.

#### **Submissions by the Domestic Industry**

11. The Domestic Industry has made the following submissions:

- (i) The petitioner and the supporter together constitute the domestic industry.
- (ii) M/s Unimark discontinued the production of the subject goods in the year 2006-07 and M/s Orchid was producing the subject goods only for exports and offering only those quantities in the market which were permitted to an EOU as per the policy for such unit, varying between 15 to 30 tones per annum. There is relevance of Unimark as they were one of the producers taken into consideration by the National Pharmaceutical Pricing Authority in a study earlier, based on which the price of Rs. 2951 per kg was notified from 1<sup>st</sup> July, 2011. Further, even if there was some problem in exporting, they could have continued to sell within the country which they could not do on account of dumped price being abnormally low.
- (iii) M/s Surya Pharmaceuticals were out of operation in so far as subject goods are concerned for quite some time.
- (iv) The petitioner has given full details of production, period wise and month wise, for their unit as well as for supporter of the application, i.e., M/s. Aurobindo Pharma Ltd, to the Authority. There is no dispute that the applicant and the supporter account for the domestic industry.

#### **Examination by the Authority**

12. M/s Lupin Limited has filed the application in the instant matter alleging dumping of bulk drug 'Cefadroxil Monohydrate' originating in or exported from the European Union and requested for imposition of the anti-dumping duties. M/s Aurobindo Pharma Ltd has supported their application and provided all the data/information for this purpose. It was stated that they represent the domestic industry as the other domestic producers of the subject goods have already stopped their production. The Authority notes that as per information provided by the National Pharmaceutical Pricing Authority, Department of Pharmaceuticals, Ministry of Chemical & Fertilizer, regarding the production of the subject goods in the POI, M/s Lupin Limited and M/s Aurobindo Pharma Ltd account for more than 50% of the domestic production of the subject goods in the POI. The Authority, thus, holds that the applicant is the domestic industry and has a clear standing as domestic industry in terms of Rule 2(b) of the Rules.

#### **E. MISCELLANEOUS ISSUES**

**Submissions by the exporters/importers/users and other opposing interested parties**

13. The exporters/importers/users and other opposing interested parties made the following miscellaneous submissions:

- i. Abnormal delay in filing the non-confidential version of the petition.
- ii. The investigation initiated without examination of information/evidence for the POI: The petitioner had filed information on dumping, injury and causal link considering the nine months period of 01.04.2010 to 31.12.2010 as the POI. However, the Authority initiated the investigation considering the POI as 18 months from 01.04.2010 to 30.09.2011. The Authority was not in possession of the complete information at the time of initiation. Therefore, the initiation was in violation of the anti dumping Rules.
- iii. Excessive Confidentiality: Unwarranted confidentiality claims of the petitioner and the wholly deficient and inadequate non-confidential version of the petition have adversely affected the right of the respondents to file a meaningful response. The information with respect to volume of production, capacity utilization, volume of sales and cost of production, selling price and profits has been claimed confidential by the petitioner without providing any reasons for claiming them to be confidential or providing a non-confidential summary of the same and after the domestic industry provides this information, another opportunity of being heard should be provided to the exporters.
- iv. Non confidential version of the petition does not contain Proforma IV A. Without Proforma IV A, it would not be possible to provide any meaningful comments on the injury suffered by the petitioner.

**Submissions by the Domestic Industry**

14. The Domestic Industry has made the following submissions:

- (i) The data in Proforma IV A was made available and even updated Proforma IV A was also provided. Further, disclosure made in the non confidential part was as per the established procedure. The defendants have also not disclosed anywhere the price which DSM is offering to various countries and within India to DSM India and other importers. They have also not made any meaningful disclosure. The domestic industry does not want to compete with them on this issue but it is a fact that they have withheld vital information.
- (ii) Their act is unsubstantiated by any facts and data. Prices are fixed based on the cost of production and the domestic industry has submitted details to the Authority showing price fixed, its cost of production and sales realization both in the country and abroad which all would substantiate injury caused to the domestic production by dumped imports at the notified price as well as on the basis of non injurious price.
- (iii) To suggest that injury parameters be determined with reference to the notified price of

the bulk drug based on the decided cases is totally unfair and unjust when it is known that exchange rate of dollar has gone up after the price of Cefadroxil Monohydrate was notified and under the new proposed policy, price control on bulk drugs is being withdrawn. The issue needs to be examined on merits as the notified price is based on the costs of raw materials and utilities which are variable elements as on the date of notification and changes in variable costs subsequently have to be taken into consideration for study of injury parameters with reference to non injurious price in a just and fair manner. If these aspects are not taken into consideration, the entire exercise would be futile. Cost is not stationary for all times irrespective of time frame. It varies from period to period depending upon the rates and variability in the consumption norms which can only be kept at a constant level for the objective in hand as per the parameters approved for such studies to determine non injurious price.

#### **Examination by the Authority**

15. As regards submission of information by the domestic industry in Proforma IV A, the Authority confirms that the requisite information was made available by both the domestic producers, namely, M/s Lupin Ltd and M/s Aurobindo Pharma Ltd to the Authority. A non confidential copy of Proforma IV A was placed in the public file maintained by the Authority.
16. As regards the information on injury parameters not being available for the entire POI, the Authority notes that initially the petitioners had submitted the application for initiation of investigation proposing POI from 1st April, 2010 to 31st December, 2010. Further, the application was noted to be deficient on a number of parameters. Accordingly, the petitioner company was requested to furnish additional information including the updated data on imports and other parameters for examination before the investigation could be initiated. It was only after the complete updated data for the domestic industry on all the relevant parameters including the amended POI from 1st April, 2010 to 30th September, 2011 was received and the Authority was prima facie satisfied on the existence of dumping, injury and causal link that the present investigation was initiated.
17. As regards excessive confidentiality, information provided by the interested parties on confidential basis was examined by the Authority with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted, and such information has been treated confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.

#### **Assessment of Dumping – Methodology and Parameters**

##### **F. METHODOLOGY FOR DETERMINATION OF DUMPING MARGIN**

##### **Normal Value, Export Price and Dumping Margin**

18. The Authority notes that the producer/exporter from EU has contended that dumping margin has to be determined after making adjustment for difference in 'Level of Trade' between sales made in domestic market and export market. DSM Netherlands has sold the subject goods in the home market, i.e., EU, directly to the end-users. However, exports to India have been made to its related company DSM India which in turn re-sold the products to unrelated end-users in India. Therefore, DSM India acted in the capacity of a wholesaler/distributor of the product in India. Therefore, appropriate adjustment for the level of trade difference should be provided.

#### **Determination of Normal Value for producers and exporters**

19. The information submitted by DSM Netherlands and DSM Spain in their questionnaire response was verified by the Authority. DSM Netherlands manufactures 7-ADCA and enzymes in its plant at Delft, Netherlands. These are supplied to DSM Spain along with other raw materials/inputs required for manufacturing the subject goods. DSM Spain carries out the final manufacturing process to manufacture the subject goods in its plant at Spain. For carrying out the final manufacturing step, DSM Spain gets a tolling fee. The subject goods are sold by DSM Netherlands either in the domestic market within EU or export markets outside EU.

20. DSM Netherlands submitted the details of sales made in the domestic market of EU and exports to India. DSM Netherlands sold the subject goods to its related company DSM Sinochem Pharmaceuticals India Pvt Ltd ("DSM India"), which further resold the subject goods to end consumers in India. In the domestic market of EU, DSM Netherlands sold the subject goods primarily to ACS DOBFAR S.P.A. Italy (who is a reseller of the subject goods) and Sandoz GmbH (who is a formulator/end user of the subject goods). DSM Netherlands made a request to the Authority to compare the export price to DSM India with the sales price to ACS DOBFAR for dumping margin calculations because both are acting at the same level of trade. In this regard, the Authority notes that the practice of the Authority, in general, has been that for the purpose of determining the dumping margin, the Authority does not distinguish between different types of sales, i.e., sales to the resellers or end-users and, thus, does not allow the level of trade adjustments on this basis and further that for determining the normal value the Authority takes all domestic sales as one and follows the weighted average rule if the sales are to resellers and end-users. In this case, the Authority, based on the facts of the case, does not see any merit to deviate from the general practice of not allowing the level of trade adjustment. The Authority, therefore, decides not to allow the level of trade adjustment in this case and accordingly, considers all the domestic sales for determination of normal value.

21. DSM Netherlands has claimed adjustments from the domestic selling price on account of inland transportation, insurance, credit cost, discount and bank charges. The expenses as verified and to the extent based on actuals have been allowed. The Authority also examined whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not by comparing the domestic selling price with the cost of production. The examination revealed that the domestic sales made by DSM Netherlands were in the ordinary course of trade. The normal value of the subject goods after allowing the deductions is worked out to US \$ \*\*\* per kg.

**Determination of Export Price for producers and exporters**

22. M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V, Netherlands, producer and exporter (DSM Netherlands) and its related trader/exporter M/s DSM Anti-Infectives Egypt SAE have submitted the Exporter Questionnaires. DSM Netherlands has exported \*\*\*kgs of subject goods to India during the POI on CIF/CIP basis having a total value of US \$ \*\*\*. Out of this, \*\*\*kgs having a total value of US\$ \*\*\*were exported directly to DSM Sinochem Pharmaceuticals India Pvt Ltd. The balance \*\*\*kgs having a total value of US\$ \*\*\*were exported to India through its related company in Egypt, DSM Anti-Infectives Egypt SAE.

23. From the CIF/CIP export price, adjustments were claimed on account of freight, insurance, credit cost and bank charges to arrive at the ex-factory export price. The adjustments from the export price have been allowed, as per actuals and as verified by the Authority. Accordingly, the ex-factory export price works out to USD \*\*\*per kg.

24. After the analysis of the data, the dumping margin is worked out as mentioned in the table below.

Producer	Exporter	Normal Value (in US\$)	Export Price (in US\$)	Dumping Margin (in US\$)	Dumping Margin %	Dumping Margin Range %
M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V, Netherlands	M/s Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V, Netherlands / M/s DSM Anti- Infectives Egypt SAE	*** per kg	*** per kg	***	***%	12-22%
Any other producer	Any other exporter	*** per kg	*** per kg	***	***%	16-25%

**ASSESSMENT OF INJURY AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK****G. INJURY**

25. The exporters / importers and other opposing interested parties have argued that:

(i) Injury analysis should be carried out by the Authority taking into account the financial and costing data of AurobindoPharma as well.

(ii) The price of the subject goods are governed by Drugs (Prices Control) Order, 1995. Irrespective of the cost of production of the petitioner, the subject goods cannot be sold at a price higher than the DPCO price. Therefore, the Non-injurious Price (NIP) of the domestic industry shall not exceed the DPCO price. The Drug Price Control Order (DPCO) prices prevailing in the

POI should alone be considered and any subsequent increase post POI should not be considered by the Authority in determining the NIP.

(iii) Re-sale price of DSM India is to be considered for determining injury parameters.

(iv) Anti dumping duty is intended to remedy any injury suffered by the domestic industry due to the sale of the imported goods in the domestic market at prices less than the prices of the domestic producers. The non-injurious price of the domestic producer has to be compared with the price at which imported products are actually competing with the domestically manufactured products. A comparison amongst two factors always has to be done at the same level, which is referred to in trade parlance as 'same level of trade'. If the non-injurious price is the final price at which the customers or penultimate dealers would receive the product at ex-factory, the comparable export price also has to be determined necessarily at that level only. Non-injurious price for a domestic industry includes all expenses incurred for production and sale of the product by the domestic producer, except the outward freight expenses incurred by the domestic industry. In other words, non-injurious price is the ex-factory price of the product for delivery in India to the customers. Hence, for a comparison of prices at the same level of trade for the exported goods, the price at which the goods are available to the end customers have to be considered.

(v) DSM Netherlands exports the subject goods only to its related importer in India, namely, DSM India, which in turn re-sells them in India after incurring selling and administrative expenses in India. These expenses are, *inter-alia*, for marketing the product and, therefore, are incurred before the goods are ready to be sold to the end customers. Thus, the price at which the end customer in India can get the imported goods is the price at which DSM India re-sells these imported goods in India. It is pertinent to mention that where importers and exporters are related, the Designated Authority considers these exporters and importers as one single economic entity and calculates the exports price based on the re-sale price of the related importer for determining the dumping margin.

(vi) As per Rule 4(d) of the AD Rules, it is the duty of the Authority to recommend to the Central Government the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. It is submitted that injury margin based on the difference between the lower of DPCO price and non-injurious price of the petitioner and the re-sale price of DSM India would be sufficient to remove the injury, if any, suffered by the petitioner because the imported goods compete with the domestically manufactured goods only at the level when they are resold in India.

(vii) The manufacturing facility used by the petitioner for the production of the subject goods can also be used to produce one other bulk drug, 'Cephalexin'. To the knowledge of the respondents, the petitioner as well as Aurobindo Pharma Limited produce both 'Cefadroxil' and 'Cephalexin' interchangeably from the same plant. The respondents also believe that the capacity disclosed in the petition for the subject goods is the combined capacity for the subject goods and Cephalexin and not for the subject goods alone. Even assuming that the capacity disclosed by the petitioner

in its petition pertains only to 'Cefadroxil' alone, it is submitted that the production capacity available in the country is far less than the domestic demand. The demand for the subject goods in India during the POI was 581 MT. As against this, the capacity available with the petitioner was just 306 MT. This shows that the capacity in the country is far less than the demand, necessitating imports from other countries. The domestic producers do not have adequate capacity to cater to the demand in the country. It is submitted that imposition of anti-dumping duty under such circumstances would adversely affect the interest of the pharmaceutical companies, resulting in spiking up of prices of medicines in the country.

(viii) Absence of causal link between alleged dumped imports and injury to the domestic industry.

(ix) The petitioner itself has stated that the landed prices of the imports are 5-10% less than their selling price during the POI. It can be observed from the questionnaire response filed by the respondents that the re-sale price of DSM India (the price at which imported goods compete with domestically manufactured goods) is 10% higher than the import price. It, thus, follows that re-sale price of imported goods is higher than the selling price of the petitioner.

(x) The petitioner domestic producer started incurring losses during the year 2009-10, i.e., the year immediately preceding the POI. However, during this year, DSM India has sold the imported goods in Indian market at DPCO prices. When the goods have been sold at prices fixed by DPCO, the domestic industry could not have suffered any losses due to the alleged dumped imports. In such a case, there exists no link between the imports and the prices of the goods sold by the petitioner. In the absence of causal link, it is prayed that the investigation may be terminated.

(xi) A major share in the domestic market is held by the other domestic producer, Aurobindo Pharma Limited. Due to the inter-se competition between the petitioner and the other domestic producer, the petitioner was required to lower its selling price and suffer injury. It is prayed that the Authority should examine the injury caused to the petitioner due to the volume and price of goods produced and sold by Aurobindo Pharma Limited.

(xii) The prices at which the subject goods can be sold to by the petitioner is controlled by the Government through DPCO, 1995. This means that if the DPCO price fixed by government is Rs. 100 and if the cost to make and sell the goods is Rs. 120, the petitioner would not have any option but to sell the goods at Rs. 100 and incur a loss of Rs. 20. This injury cannot in any manner be attributed to the subject imports. The primary cause of injury to the petitioner is the fact that the selling price of the subject goods is regulated by the government through DPCO.

(xiii) Anti dumping duty, if any, should be levied on a reference price basis.

26. The domestic industry has argued that:



- (a) Imports from the subject territory have increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India.
- (b) Imports from the subject territory are undercutting the prices of domestic industry to a significant extent. The import price is undercutting the domestic price.
- (c) Whereas the cost of production was increasing, the selling prices declined. Further, even when there was some decline in the cost of production in earlier years, the decline in prices was more than the decline in costs. Overall, the imports are suppressing and depressing the domestic prices.
- (d) The market share of the domestic industry in the demand has declined.
- (e) Performance of the domestic industry with regard to profits, return on investment and cash profits was declining and became negative in the POI.
- (f) Wages and productivity have improved.
- (g) Dumping margin as a measure of extent of dumping is quite significant.

#### Examination by the Authority

27. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, "... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to suppress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

28. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the Rules supra.

29. Annexure-II of the AD Rules provides for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

30. The Authority has considered the views of the interested parties and addressed the same appropriately. The specific submissions of interested parties have been dealt with by the Authority at appropriate places while examining the injury parameters to the domestic industry.

31. As regards the specific issues raised by the interested parties with regard to injury parameters to the domestic industry, the Authority has examined the matter as under:-

- a. The injury analysis has been carried out by the Authority based on the information / data furnished by the applicant companies M/s Lupin Ltd as well as M/s Aubindo Pharma, verified to the extent considered relevant.
- b. The Authority has undertaken the determination of NIP for the domestic industry in accordance with the provisions of the Anti Dumping Rules. Further, a comparative analysis has also been made of the NIP for the domestic industry with prevailing DPCO prices. As elaborated herein, the lower of the NIP and the DPCO price has been considered by the Authority.
- c. The injury to the domestic industry on account of the prices of the subject goods being controlled by the Government of India under the DPCO has been separately determined in order to quantify the injury on account of dumping of the subject goods.
- d. Since the NIP for the domestic industry has been determined at ex-factory level, a comparison of the same has been made with the landed value of imports in accordance with the provisions of Rules and in accordance with the consistent practice followed by the Authority in such cases.
- e. The contention of the exporters that the domestic industry does not have adequate capacity to cater to the demand in India is irrelevant as the purpose of the anti dumping investigation is not to restrict the imports but to ensure that the imports of subject goods take place at a fair price.
- f. The contention of the interested parties that the capacities of Cefadroxil Monohydrate and Cyfaexamine are interchangeable has been examined and the Authority has considered only the capacity in respect of Cefadroxil Monohydrate for the purpose of injury analysis and for determination of NIP for the domestic industry.

**G.1 Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry**

**a) Import volumes and share of subject country**

32. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry, para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states as follows:

“The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual

and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments”.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)	POI- Annualized
<b>Imports -</b>						
European Union	MT	124.19	161.70	136.67	287.25	191.00
Other Countries	MT	6.6	0	9.8	0	0
<b>Total Imports</b>	<b>MT</b>	<b>130.80</b>	<b>161.70</b>	<b>146.50</b>	<b>287.23</b>	<b>191.00</b>
<b>Market Share in Imports</b>						
European Union	%	95.38	100.00	93.29	100	100.00
Other Countries	%	4.62	0	6.71	0	0

33. It is noted that the imports from European Union have recorded a significant increase in absolute terms during the injury period from 124.19 MT in 2007-08 to 287.25 MT during the POI (191 MT annualised). The Authority further notes that the volume of imports from countries other than EU has been insignificant in the injury period.

b) Assessment of Demand and Market Share

34. The Designated Authority has determined demand as the sum of domestic sales of the domestic industry, sales of other Indian producers and imports of the subject goods in India from all sources. The demand, so assessed, is shown in the following table. It is seen that demand for the subject goods had grown significantly in 2008-09 over the base year. Further, during the subsequent year and the POI, there is no significant change in the demand of the subject goods.

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)	POI- Annualized
<b>Demand</b>						
Sales of Domestic Industry	MT	112.02	189.57	192.78	207.64	138.45
Sale of other Domestic Producers	MT	35.15	57.17	30.27	64.10	42.73
European Union-Imports	MT	124.19	161.70	136.67	287.25	191.69
Other Countries-Imports	MT	6.6	0	9.8	0	0
<b>Total demand</b>	<b>MT</b>	<b>277.96</b>	<b>408.44</b>	<b>369.55</b>	<b>558.96</b>	<b>372.64</b>
<i>Trend</i>		<i>100</i>	<i>145</i>	<i>133</i>	<i>201</i>	<i>201</i>
<b>Market Share in Demand</b>						
Domestic Industry	%	40.30	46.41	52.17	37.15	37.15
Other Domestic Producers		12.64	14	8.19	11.46	11.46

European Union-Imports	%	44.68	39.59	36.98	51.39	51.39
Other Countries-Imports	%	2.37	0.00	2.65	0.00	0.00

35. The Authority notes from the above that the share of domestic industry in the total demand has declined from 40.30% during the base year to 37.15% during the POI. On the other hand, the market share of imports from the subject territory has registered an increase from 44.68% to 51.39%. The Authority further notes that while there has been an increase in the demand for the subject goods during the injury period, the increase in the volume of imports from the subject territory was significantly higher than the increase in the quantum of sales of the domestic industry.

## G.2 Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

### a) Price Undercutting

36. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:

*"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."*

37. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. In this regard, a comparison was made between the landed value of the product concerned and the average selling price of the domestic industry net of all rebates and taxes to elaborate. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in the subject territory were imported in the Indian market at prices which were lower than the domestic industry selling prices. It is, thus, noted that imports of subject goods were undercutting the domestic prices and margin of undercutting is considered significant in case of imports from European Union.

38. The price undercutting margin is determined as below:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)
Net Selling Price	Rs./KG	***	***	***	***
Trend		100	110.13	106.15	101.74

Landed price of imports	Rs./KG	2468.88	3252	2416	2346
<i>Trend</i>		<i>100</i>	<i>131.72</i>	<i>97.85</i>	<i>95.03</i>
Price Undercutting	Rs./KG	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	Range	0-2%	(10-25%)	3-12%	5-15%

39. The Authority notes from the above that during the year 2008-09, as compared to the base year, there was an increase in the selling price as well as the landed price of import from the subject territory. During this period, while the selling price of a domestic industry increased by above 10%, the increase in the landed value of imports was much higher at 32%. In the subsequent period, there was a significant decline in the landed value of imports while the decline in the selling price of the domestic industry was only marginal. As a consequence, whereas in the years 2007-08 and 2008-09, the undercutting by the imports was negative, it increased significantly during 2009-10 and the POI.

#### b) Price Suppression and Depression

40. The cost and selling price movement of the domestic industry and the landed value of imports from the subject territory have been compared over the injury period to examine whether the effect of dumped imports is to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree. The trends in this regard are summarized below:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)
Landed price of imports	Rs./KG	***	***	***	***
<i>Trend</i>		<i>100</i>	<i>131.72</i>	<i>97.85</i>	<i>95.03</i>
Net Selling Price	Rs./KG	***	***	***	***
<i>Trend</i>		<i>100</i>	<i>110.13</i>	<i>106.15</i>	<i>101.74</i>
Cost of Sales	Rs./KG	***	***	***	***
<i>Trend</i>		<i>100</i>	<i>96.49</i>	<i>90.51</i>	<i>102.09</i>

41. During the year 2008-09, while the cost of sales of the domestic industry declined, the selling price of the domestic industry moved upward by 10%. On the other hand, during the same period the landed value of imports increased by a significantly higher percentage of 32%. The analysis of the trends in the landed value of imports, cost of sales and the net selling price of the domestic industry, as above, does not prime-facie suggest any evidence of price suppression or depression on account of dumping of the subject goods.

#### c) Comparison of NIP vs DPCO Prices

42. A comparison of the NIP for the domestic industry with the prices as notified by the Indian Government under DPCO indicates that the DPCO prices are marginally lower than the NIP for the domestic industry. The Authority, therefore, notes that part of the injury to the domestic industry has been on account of the prices of the subject goods being subject to Government control. However, for the propose of determining to injury to the domestic industry on account of dumped imports, a comparison has been made of the landed value of imports with lower of the two, i.e., average prices as per DPCO during the POI and the NIP for the domestic industry. Based on the above, the injury margin suffered by the domestic industry on accounts of dumped imports is as in the table below:

Particulars	Unit	POI
Non Injurious Price Rs/Kg	Rs/Kg	***
Average Prices as per DPCO	Rs/Kg	2790
Landed Price	Rs/Kg	***
Injury Margin	Rs/Kg	***
Injury Margin (%)	%	***
Injury Margin Range	%	12 to 25

### G.3 Economic Parameters of the Domestic Industry

43. Annexure II to the AD Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered material injury. Various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

#### (a) Capacity, Production, Capacity Utilization and Sales

44. Information on capacity, production, capacity utilization and sales volumes of the domestic industry has been as under:-

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April	Annualized POI
-------------	------	---------	---------	---------	--------------	-------------------

					2010 to Sept. 2011)	
Capacity-Domestic industry	MT	514	514	514	771	514
Production-Domestic industry	MT	186	300	310	374	249.37
Capacity Utilization- Domestic industry	%	36.25%	58.41%	60.35%	48.52%	48.52
Sales-Domestic	MT	112	190	193	208	139

45. The Authority notes that during the injury period and the POI, the actual capacity utilization as well as the domestic sales of the domestic industry have shown an upward trends till 2009-10. However, the capacity utilization of the domestic industry declined to 48.52 % in the POI. Similarly, during the POI, the sales of the domestic industry also declined significantly whereas no change in the demand for the subject goods has been noted. The Authority further notes that while the production, capacity utilization and the sales of the domestic industry declined during the period of investigation, the volume of imports from the subject territory registered an increase during the same period.

**(b) Profits, Return on Capital Employed and Cash Profit**

46. The profits, return on investment and cash flow of the domestic industry have been examined as under:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)
Cost of Sales	Rs/KG	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	96	90	102
Selling price	Rs/KG	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	110	106	102
Profit/loss per Unit	Rs/KG	***	***	***	***
<i>Trend</i>		(100)	(18)	(0.43)	(104)
Profit before Tax	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>		(100)	(30.49)	(0.74)	(193.33)
Interest	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	216	83	72
Profit before Interest & Tax	Rs.Lacs	(***)	***	***	(***)
Capital employed	Rs.Lacs	***	***	***	***
Return on	%	(****%)	****%	****%	(****%)

capital employed					
Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend		(100)	91	(75)	(190)

47. The Authority notes from the above as under:

- i. The net selling price of the domestic industry in the base year and the POI is in line with the cost of sales of the domestic industry.
- ii. The profitability of the domestic industry improved till 2009-10, but declined in the POI.
- iii. The decline in the profitability of the domestic industry during the POI was noted to be on account of significant decline in the volume of domestic sales of the domestic industry.

(c) Employment and Wages:

48. The status of employment levels and wages of the domestic industry has been as under:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)
Wages	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend		100	168	248	347
Employment	Nos.	***	***	***	***
		100	147	219	214

49. The number of employees as well as the wages of the domestic industry have registered an increasing in the injury period.

(d) Productivity of Employees

50. The productivity of the employees of the domestic industry is given in the following table:

Productivity of Employees	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)
Output per Employee	MT	***	***	***	***
Trend		100	109	36	50



51. The Authority notes that the productivity per employee during the year 2009-10 has declined as compared to base year due to increase in the number of employees deployed during the period. However, the same has increased in the POI in comparison to the year 2009-10.

**(e) Inventories**

52. The Authority has examined the inventory level of the domestic industry, which is given in the following table:-

Stock ( Volume)	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)
Opening	MT	***	***	***	***
Closing	MT	***	***	***	***
Average	MT	***	***	***	***

53. It is noted that the inventory of the domestic industry has increased during the period of investigation.

**(f) Factors Affecting Domestic Prices**

54. Consideration of the import prices from the subject territory and other countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market show that the landed value of imported material from the subject territory is below the selling price of the domestic industry, causing significant price undercutting in the Indian market. It is further noted that most of the imports of subject goods from other countries are at much higher prices. There is no viable substitute to this product. It is also noted that demand for the subject goods was showing significant increase during the injury period and this could not have been a factor affecting domestic prices. Thus, the principal factors affecting the domestic prices is landed value of the subject goods from subject territory and cost of the raw materials.

**(g) Ability to raise capital**

55. The Authority notes that the units representing the domestic industry are multiproduct companies. The share of production and sales of the subject goods in the overall operations of both the companies has been noted to be very insignificant. Therefore, the Authority notes that any change in the profitability and performance of both the companies in respect of operations from the subject goods may not significantly impact the ability of these companies to raise capital.

**(h) Growth**

56. With regard to the growth of the domestic industry, the Authority notes the following:

Growth (year by year)	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI April 2010 to Sept. 2011)
Production	%	-	***	***	***
Sales Volume	%	-	***	***	***
Profit/Loss per unit	%	-	***	***	***
Return on Investment	%	-	***	***	***
Market Share	%	-	***	***	***

57. The Authority notes that the production, sales volume, profits and the Return on Investment of the domestic industry declined in the injury period and the POI.

#### G.4 Price as per Drug Price Control Order (DPCO), 1995

58. The Authority notes that the Central Government vide Notification No. S.O. 539(E) dated 20.3.2008 has fixed the maximum sales price of Cefadroxil Monohydrate at Rs.2758/ per kg. Subsequently, on 1.7.2011, the Central Government vide Notification No S.O. 150(E) dated 1.7.2011 revised the maximum selling price of Cefadroxil Monohydrate to Rs. 2951/ per kg. Thus, the average DPCO price of the subject goods during the period of investigation was Rs. 2790/ per kg. Since the injury caused to the domestic industry is partly due to the maximum selling price notified by the Government, the Authority has considered the average DPCO price, as notified by the Government, for the purpose of working out injury as may be attributed to the dumped imports.

Particulars	Unit	M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V.	Other producers / exporters
DPCO Price	Rs./Kg	2790	2790
Landed Price	Rs./Kg	***	***
Injury Margin	Rs./Kg	***	***
Injury Margin	%	***	***
Injury Margin Range	%	12 to 25	14 to 27

#### G.5 Other Known Factors and Causal Link

59. As per the AD Rules, the Designated Authority is, inter alia, required to examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, so that the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology, export performance and the productivity of the domestic industry. The Authority has examined whether other factors listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry.

60. The examination of causal link has been done as follows:

(a) Imports from third countries and other known factors

61. The Authority notes that the volume of imports from the countries other than the subject territory has been insignificant.

(b) Contraction in demand and / or change in the pattern of consumption

62. There has been increase in demand in the injury period with slight decrease in the period of investigation. Therefore, no injury to the domestic industry can be attributed to contraction in demand or changes in the pattern of consumption of the subject goods.

(c) Trade restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

63. It is noted that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject territory compete directly with the subject goods supplied by the domestic industry. It is also noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses. There is no evidence of trade restrictive practices of and competition between the foreign producers and domestic producers causing injury to the domestic industry.

(d) Developments in Technology

64. There is no allegation of developments in technology, nor has the investigation so far shown that possible injury to the domestic industry could have been caused by developments in technology.

(e) Export performance

65. The Authority notes that the volume of exports of the petitioner companies are not very significant. Therefore, the losses to the domestic industry during the injury period and the period of investigation can not be attributed to the export performance of the domestic industry.

(f) Productivity of the domestic industry

66. The Authority notes that there is no significant change in the productivity of the domestic industry during the POI over the base year.

#### **G.6 Causal Link**

67. The following submissions have been made by the exporters/importers and other opposing interested parties with regard to the injury to the domestic industry and the casual link.

- i. There exists no link between the imports and the prices of the goods sold by the petitioner. In the absence of causal link, it is prayed that the investigation may be terminated.
- ii. The prices at which the subject goods can be sold by the petitioner are controlled by the Indian Government through DPCO, 1995. The primary cause of injury to the petitioner is the fact that the selling price of the subject goods is regulated by the government through DPCO. The Authority should examine whether the petitioner would have earned profits in the absence of any competition from the imported goods keeping in mind the fact that the selling prices of the subject goods are controlled by DPCO.
- iii. The petitioner started incurring losses during the year 2009-10, i.e., the year immediately preceding the POI. However, during this year, DSM India has sold the imported goods in Indian market at DPCO prices. When the goods have been sold at prices fixed by DPCO, the domestic industry could not have suffered any losses due to the alleged dumped imports.
- iv. A major share in the domestic market is held by the other domestic producer, AurobindoPharma Limited. Due to the inter-se competition between the petitioner and other domestic producer, the petitioner was required to lower its selling price and suffer injury.

68. The following submissions have been made by the domestic industry with regard to the injury to the domestic industry and the casual link.

- i) Imports from the subject territory are undercutting the prices of domestic industry to a significant extent. The import price is undercutting the domestic price.
- ii) Whereas the cost of production was increasing, the selling prices declined. Further, even when there was some decline in the cost of production in earlier years, the decline in prices was more than the decline in costs. Overall, the imports are suppressing and depressing the domestic prices.
- iii) Performance of the domestic industry with regard to profits, return on investment and cash profits was declining and became negative in the POI.

#### **Examination by the Authority**

69. The Authority notes that while listed known other factors do not show that injury to the domestic industry has been caused by these factors, following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports.

70. There has been a significant increase in the volume of dumped imports from the subject territory at the absolute level. The market share of dumped imports from the subject territory in total imports of subject goods has remained significantly high. It is also noted that the dumped imports were undercutting the prices of the domestic industry in the market. It is also determined that the dumped imports have had significant adverse price effect in terms of price depression and price underselling. Further, the dumping margins from responding producers and exporters from the subject territory have been determined and are considered significant. It is noted that dumped imports of subject goods from the subject territory have adversely impacted the production and sales levels of the domestic industry. Further, it is also noted that the dumped imports have had significant adverse price effect in terms of price depression and price suppression which in turn have led to significant deterioration in profits and return on investments. Therefore, the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury and such injury has been caused significantly by price and volume effects of dumped imports from the subject territory. The Authority, therefore, holds that material injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports of subject goods from the subject territory.

71. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry taking into consideration cost of production of the domestic industry. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports of the responding producers and exporters to determine injury margin. The injury margins have been worked out as follows:

Injury Margin

Unit: US\$ per kg

Producer	Non Injurious Price	Landed Price	Injury Margin (IM)	IM%	Injury Margin Range %
M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V, Netherlands	***	***	***	***	12 to 25
Any other producer/exporter	***	***	***	***	14 to 27

72. The level of dumping margins and injury margins, as determined are, considered significant.

#### H. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES:

73. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the

subject country/territory in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

74. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of this product. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline in the performance of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

## **I. POST DISCLOSURE STATEMENT SUBMISSIONS BY THE INTERESTED PARTIES**

### **I.1 Post Disclosure Statement submissions by the opposing Interested Parties**

75. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the opposing interested parties:

i. It is reiterated that non-confidential copy of Proforma IV-A was never made available despite several reminders. Such an action on the part of DGAD is against Rule 6(7) of AD rules as well as Article 6.1.2 of WTO: ADA.

ii. The excess confidentiality was claimed by domestic industry with respect to various injury parameters including inventories, growth, depreciation & fixed assets, which should have been disclosed.

iii. Rule 6 provides that due allowance shall be made in each case on its merits for differences which affect price comparability including levels of trade. DGAD is bound to follow existing rule and cannot decide to neglect them in the guise of past practice. DSM has provided sufficient evidence and justification with respect to level of trade adjustment and therefore request DGAD to allow the level of trade adjustment in the present case and re-compute the dumping margin.

iv. In terms of Rule 15(1) of Antidumping Rules, DSM Netherlands and DSM Spain has made an offer for a price undertaking. No communication has been received in this regard from DGAD nor this fact has been considered in disclosure statement. In view of the same, DSM again reiterates its request for price undertaking.

v. During 2009-10, the landed price of the subject goods was lower than 2008-09. Despite this fact, the profitability of the domestic industry improved drastically during 2009-10. This clearly shows that causal link between the imports and injury to domestic industry is absent.

vi. Injury caused to the petitioner due to factors like domestic competition and Government control should not be attributed to injury suffered due to dumping. DGAD has not examined whether the petitioner would have earned profits in the absence of any competition from the imported goods keeping in mind the fact that the selling prices of the subject goods are controlled by DPCO.

vii. Injury is self inflicted since number of employees has gone up despite Domestic Industry claiming fall in capacity utilization.

viii. In the disclosure statement, the Authority has observed that the facts do not prime-facie suggest any evidence of price suppression or depression on account of dumping of the subject goods. However, at other places in the disclosure statement, DGAD has made contrary observations. DGAD is requested to clarify and provide a revised disclosure statement, so that DSM may offer its comments.

ix. DGAD has considered that the subject goods produced by the domestic industry and that imported from subject territory are comparable, inter-alia, in terms of manufacturing process & technology and distribution & marketing. DSM submits that there exists different manufacturing process, technology, distribution and marketing as compared to domestic industry. DSM has a patented process, which others cannot use. Domestic Industry sells direct and mostly in FDF, whilst respondents sell via reseller in India (DSM India). DSM brands the product as Puridrox as it is a more pure, clean and green product than that of the applicant and other competitors.

x. Comparison of NIP of the domestic producer and price of imported products has to be done at a same level, which is referred to in trade parlance as 'same level of trade'. If NIP is the final price at which the customers or penultimate dealers would receive the product at ex-factory, the comparable export price also has to be determined necessarily at that level only. For a comparison of prices at the same level of trade for the exported goods, the prices at which the goods are available to the end customers have to be considered.

xi. DSM Netherland exports the subject goods only to its related importer in India, namely, DSM India, which in turn re-sells them in India after incurring selling and administrative expenses in India. These expenses are, inter-alia, for marketing the product and therefore are incurred before the goods are ready to be sold to the end customers. Thus, the price at which the end customer in India can get the imported goods is the price at which DSM India re-sells these imported goods in India. Since, importers and exporters are related, DGAD has considered before and should again consider in this case, these exporters and importers as one single economic entity and calculate the exports price based on the re-sale price of the related importer for determining the dumping margin.

xii. Since the prices of subject goods are controlled by DPCO, the importer cannot in any manner re-sell the products at a price higher than the DPCO price. Under such circumstances with consistent weakening of rupee, fixed rate of duty, the import price along with Anti-dumping Duty would exceed the DPCO price. As a result, reference price based duty in terms of Indian Rupees would be appropriate.

xiii. DGAD is requested to add the name of M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Spain S.A, Spain, in the dumping margin and injury margin table. Further, in case the Authority decides to levy antidumping duty on the exports made by the respondents, the name of M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Spain S.A, Spain may be added to the duty table.

#### 1.2 Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry

76. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the domestic industry:

- i) Domestic Industry has already submitted all the necessary details and as such there are no additional comments to make. Dumping of the subject goods continues on a larger scale causing injury to the domestic industry with each passing day.

#### 1.3 Examination by the Authority

77. The Authority notes that most of the post disclosure statement submissions made by the opposing interested parties are repetitive in nature and have already been dealt with in the Disclosure Statement and are again addressed to in this Final Findings Notification under the appropriate headings. With regard to the claim that non-confidential copy of Proforma IV-A was never made available, the Authority noted that non-confidential copy of Proforma IV-A was placed in the public file for perusal by the interested parties. With regard to the claim of DSM Netherlands and DSM Spain for a price undertaking, the Authority has not accepted price undertaking in view of the practical difficulties in monitoring price undertakings. As regards inclusion of DSM, Spain, the Authority noted that DSM Spain is only engaged in partially processing some of the activities in the manufacturing of the subject goods and gets a tolling fee for the same. DSM Spain is not the principal manufacturer nor any documents regarding exports have been raised in the name of DSM, Spain. Therefore, the Authority does not agree with the inclusion of the name of DSM, Spain in the dumping margin table, injury margin table and duty table. With regard to the claim that duty be fixed based on Reference Price, the Authority noted that the form of duty is decided by the Authority keeping in view the nature, circumstances and merits of the individual case and accordingly, fixed duty has been determined in this case. As regards the claim of the exporter for adjustment on account of level of trade, the Authority notes that majority of the sales in the domestic market are to the re-seller. The Authority, therefore, has considered the weighted average of the domestic sales for determination of normal value.

#### J. Conclusion

78. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that the product under consideration Bulk Drug Cefadroxil Monohydrate has been exported to India from the European Union below its associated normal value, thus, resulting in dumping of the product. The domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods. The material injury has been caused by the dumped imports from the European Union.

#### K. Recommendations

79. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested



parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and the causal link. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive anti dumping duty is required to offset dumping and consequent injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of the subject goods from the European Union in the form and manner described hereunder.

80. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per amount specified in the table below is recommended to be imposed from the date of the Notification to be issued by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from the European Union..

**Duty Table**

Sl No	Sub-heading	Description of goods	Country of origin	Country of exports	Producer	Exporter	Amount	Unit of measurement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	29420011	Bulk Drug Cefadroxil Monohydrate	European Union	European Union	M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V, Netherlands	M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V, Netherlands	7.88	Kg	US\$
2	29420011	Bulk Drug Cefadroxil Monohydrate	European Union	European Union	M/s DSM Sinochem Pharmaceuticals Netherlands B.V, Netherlands	M/s DSM Anti-Infectives Egypt SAE	7.88	Kg	US\$
3	29420011	Bulk Drug Cefadroxil Monohydrate	European Union	European Union	Any combination except at Sl No 1 and 2 above		9.03	Kg	US\$
4	29420011	Bulk Drug Cefadroxil Monohydrate	European Union	Any except European Union	Any	Any	9.03	Kg	US\$
5	29420011	Bulk Drug Cefadroxil Monohydrate	Any except European Union	European Union	Any	Any	9.03	Kg	US\$

81. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
82. An appeal against the order of the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

J. S. DEEPAK, Designated Authority